* वर्ष 45 * अंक 7 * जुलाई 2018

हंसती दुनिया

₹15/-

हँसती दुनिया

• वर्ष 45 • अंक 7 • जुलाई 2018 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries :
Equivalent to U·S· Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
9. समाचार
20. अनमोल वचन
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कहानियां

10. संगत का फल
: अभय खरे

18. परिश्रम ही जीवन है
: सुशीला

19. तीन चूहे
: मदनेन्द्र

21. गड़रिया और मेमना
: सीताराम गुप्ता

24. फूल और कांटा
: अंजना त्रिपाठी

29. मुझसे नहीं हो पाएगा
: दीपक कुमार

31. चिरायु मार्कण्डेय
(पौराणिक कथा)

42. नगाड़ों की आवाज
: कमल सोगानी

46. नमक की लाज
: जगदीश कौशिक

विशेष लेख

7. बाबा हरदेव सिंह जी के दिव्य वचन

8. कहाँ से आता है मानसून?
: कमल सोगानी

16. उड़ने वाली कार और मोटरसाइकिल
: किरण बाला

22. गुणकारी जामुन
: राजकुमार जैन

26. हमारी नदियां
: अंकुश्री

28. जलपक्षी हंस
: किरण बाला

40. चींटियों से भी सीख ...
: डॉ. विनोद गुप्ता

50. 'सेल्फी' से 'स्वयं' को बचायें
: दमनेश कुमार

कविताएं

6. मनभावन सावन
: राजेन्द्र निशेश

17. अब तो करनी हमें पढ़ाई
: महेन्द्र सिंह शेखावत

17. संगीत मधुर है किससे कम
: रूपनारायण काबरा

25. वर्षा की बूंदें, बादल का घूंघट
: कमलसिंह चौहान

39. देखो, बरखा रानी आती
: राहुल शर्मा

39. आई वर्षा
: डॉ. रामनिवास 'मानव'

सबसे पहले

सच्ची खुशी

आज स्कूल में सामान्य ज्ञान एवं लेखन प्रतियोगिता होनी है। हर कोई प्रतियोगिता में प्रथम आना चाहता है इसलिए सभी विद्यार्थी अपनी पूरी तैयारी के साथ आ रहे हैं। स्कूल में एक विद्यार्थी बहुत होनहार है। हर विद्यार्थी यही सोच रहा था कि प्रतियोगिताओं में हमेशा उसी होनहार विद्यार्थी को ही प्रथम स्थान प्राप्त होता है। इस बार भी वही प्रथम आयेगा इसलिए लगभग सभी विद्यार्थी अपने मन ही मन में दूसरे या तीसरे स्थान पर आने की ही सोच रहे हैं।

कुछ दिन बाद प्रतियोगिता का परिणाम घोषित करने का समय आ गया। सभी आश्वस्त थे कि इस बार भी उसी विद्यार्थी को प्रथम पुरस्कार मिलेगा जिसके बारे में अक्सर चर्चा होती रहती है... परन्तु यह क्या? वह विद्यार्थी मंच पर अध्यापकों के साथ पहले ही आ गया है और उसके हाथ में कुछ पेपर भी हैं। अब तो सभी समझ चुके थे कि यही प्रतियोगिता का असली विजेता है।

प्रिंसिपल महोदय ने अपने साथ आए विद्यार्थी का परिचय दिया और कहा कि आज यह विद्यार्थी प्रतियोगिता के विजेताओं के नाम घोषित करेंगे।

उस विद्यार्थी ने सभी शिक्षकों और सहपाठियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि मुझे खुशी होती है आप सबके इस विचार को जानकर कि मैं ही प्रथम आऊंगा। आप सभी की यह धारणा हमेशा से सच भी होती रही है। यह भी आप सभी की शुभकामना का ही परिणाम है कि मुझे आज विजेताओं का नाम घोषित करने के लिए यहाँ बुलाया गया है।

तालियों की ध्वनि में उसने विजेताओं के नाम घोषित किए और प्राध्यापक जी ने उन सभी को पुरस्कार दिए। परन्तु उन विजेताओं में उसका नाम नहीं था।

अब प्राध्यापक ने सभी विजेताओं का सम्मान किया और कहा कि सभी अपनी योग्यता को और बढाएं, दृढ़विश्वास और मेहनत के साथ सभी अन्य विद्यार्थियों का सहयोग भी करें। उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा भी दें। प्रतियोगिता में प्रथम या द्वितीय आना केवल एक स्वस्थ परम्परा है कि वस्तुत: हमें अपनी योग्यता को और निखारना है और उसमें अपनी सकारात्मक सोच को हमेशा साथ रखना है। आज वास्तव में प्रथम ही नही; सर्वप्रथम वह विद्यार्थी आया है जिसने सभी विजेताओं के नाम घोषित किए हैं। उसने इस प्रतियोगिता में हिस्सा भी लिया परन्तु साथ ही इसने हमसे आग्रह किया कि मुझे इस प्रतियोगिता का हिस्सा न माना जाए। मैं अपने बाकी साथियों, सहपाठियों को प्रथम आते देखना चाहता हूँ। उनकी खुशी में मुझे अपनी सच्ची खुशी मिलेगी इसलिए सच्चे अर्थों में यह होनहार व्यक्तित्व का धनी है। हमारी दृष्टि में ऐसी सोच होना और उसको आचरण में लाकर दिखाना ही महानता का लक्ष्य एवं लक्षण दोनों है।

सभी ने करतल ध्वनि से उस विद्यार्थी का अभिवादन किया।

प्यारे साथियों! यह हमारे लिए एक विद्यार्थी द्वारा अपने आचरण से दिया गया एक पाठ है, जिसे हमें भी अपने जीवन में अपनाना है। संसार में अनेकों प्रतियोगिताएं होती हैं और केवल उसी को हम अपनी सफलता का मापदंड समझ लेते हैं। सफलता तो केवल एक समझ का नाम है, दूसरों को खुशी देने का नाम है। जब हम दूसरों को खुशी देने का कारण बनते हैं तब हम परमात्मा की रचना, इस सम्पूर्ण मानवता को खुश करने का कारण बनते हैं। अपने इस प्रयास को हमें निरन्तर गतिशील रखना है ताकि हम मानवता को खुशी देने का कारण बन सकें। वास्तव में यही सच्ची सफलता है।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 169

लोहा झट ही सोना होन्दा जो पारस नूं छोहंदा ए।
चंदन कोल जो बूटा उग्गे चंदन वरगा होन्दा ए।
हसदे कोल आ के हस पैंदा जेहड़ा बन्दा रोंदा ए।
रोगी नूं जद दारू मिलदा सुख दी नीन्दर सौंदा ए।
मैले कपड़े दी ज्यों साबण सारी ही मल धोन्दा ए।
गंगा दे विच डिगया गंदा जल वी गंगा होन्दा ए।
भावें किन्ना पापी होवे सन्त शरन जे आंदा ए।
कहे अवतार देर नहीं लगदी छिन विच मुक्ति पांदा ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि पापी से पापी व्यक्ति भी जब सद्गुरु की शरण में आ जाता है तब वह क्षणभर में मुक्ति प्राप्त कर लेता है। फिर उसकी मुक्ति में कोई विलम्ब नहीं होता। जिस प्रकार पारस का स्पर्श पाकर लोहा एकदम से सोना बन जाता है, उसके सोना बनने में कोई समय नहीं लगाता, जिस प्रकार चन्दन के पास उगने वाला पौधा भी चन्दन की भांति ही खुश्बूदार हो जाता है; हँसते हुए व्यक्ति के पास आने वाला व्यक्ति भी हँसने लगता है और रोते हुए व्यक्ति के पास पहुँचने वाला व्यक्ति भी रोने लगता है। उसी प्रकार सद्गुरु का संग पाकर भक्त के जीवन में परिवर्तन आ जाता है। उसका दुख समाप्त हो जाता है, वह सुख की सांस लेता है। अब यह इन्सान पर निर्भर करता है कि वह हँसते हुए का संग करके हँसना चाहता है या हमेशा रोते रहने वाले के संग रहकर रोते हुए ही जीवन व्यतीत करना चाहता है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि सद्गुरु का संग पाकर इन्सान का कल्याण हो जाता है। जिस प्रकार रोगी पीड़ा के कारण सारी रात जाग कर बिताता है लेकिन सही औषधि मिल जाए तो आराम की नींद सोता है, उसी प्रकार सद्गुरु से जब नाम की औषधि मिल जाती है तो दुखी इन्सान भी सुखी हो जाता है। प्रार्थना किए जाने पर सद्गुरु द्वारा जिज्ञासु को दिया जाने वाला परमात्मा का ज्ञान ही नाम की वह औषधि है जो मानव की समस्त पीड़ा को समाप्त कर देती है। जैसे मैले कपड़े को साबुन का संग मिल जाये तो वह कपड़े की सारी मैल को धो देता है। गंगा में आकर गिरने वाला गंदा जल भी गंगा जल कहलाता है, इसी तरह पापी से पापी इन्सान का कल्याण सद्गुरु की शरण में आते ही हो जाता है।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि इन्सान मुक्ति की इच्छा तो रखता है लेकिन इसके लिए वह उचित उपाय नहीं करता। इन्सान मुक्ति तब तक प्राप्त नहीं कर पाता जब तक कि वह सद्गुरु की शरण में नहीं आता। जिस प्रकार साधारण लोहे को सोना बना देना पारस का काम है, साधारण पौधे को महक से भर देना पास में लगे चंदन के पेड़ का काम है, इसी प्रकार शरण में आए हर इन्सान का तत्क्षण कल्याण कर देना सद्गुरु का कार्य है, सद्गुरु का स्वभाव है, सद्गुरु का विरद है। अतः हर इन्सान को सद्गुरु की शरण में आकर अपना जीवन अवश्य सफल करना चाहिए।

बाल गीत : राजेन्द्र निशेश

मनभावन सावन

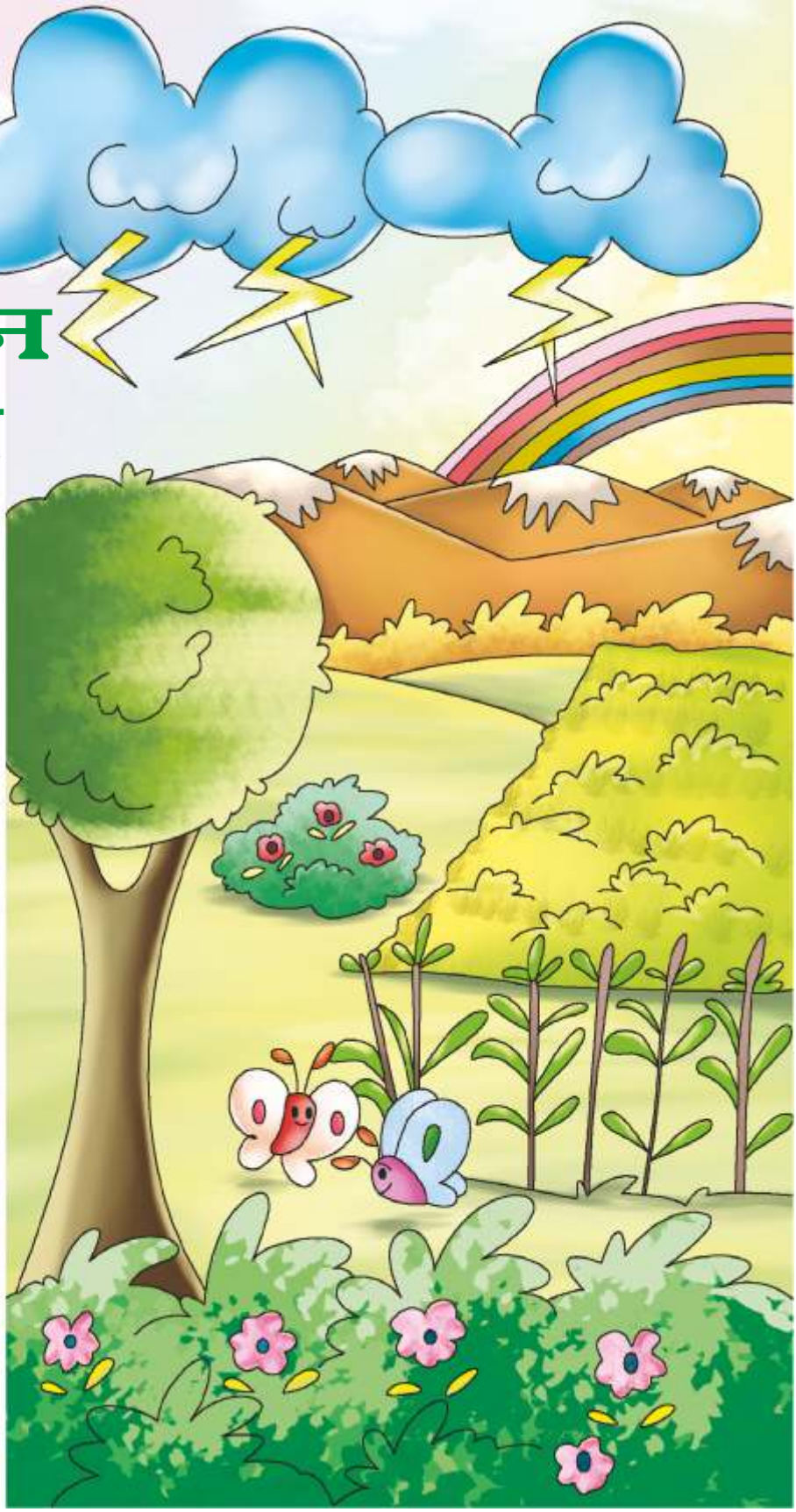

रिमझिम की लगी फुहार,
मनभावन सावन है आया।

कूक रही कोयल मतवाली,
झूम रही हर डाली-डाली।
सरिता कल-कल स्वर में गाती,
चहूं दिशा फैली हरियाली।
मस्त मोर है नाच दिखाता,
मनभावन सावन है आया।

उमड़-घुमड़कर बादल आते,
भर-भर झोली पानी लाते।
आसमान में आते जाते,
कैसे कैसे रंग दिखलाते।
इन्द्रधनुष कभी सज जाता,
मनभावन सावन है आया।

हँसते मुखड़े लगते प्यारे,
झूलों को लहराते सारे।
जोश-जोश में पेंग बढ़ाते,
इनके सभी खेल हैं न्यारे।
धूम मची है पकवानों की,
मनभावन सावन है आया।

बाबा हरदेव सिंह जी के दिव्य वचन

★ भक्त एक खिले फूल की भांति होता है और भक्ति उसकी महक है।

★ जो हरि के रंग में रंगे हुए हैं उनमें ही पवित्रता है पावनता है।

★ हमेशा विनम्रता, प्यार, करुणा और दया के भाव से युक्त रहना चाहिए।

★ मन में यही शुकराने का भाव हमेशा बना रहे कि मालिक तेरी कृपा है जो तूने सबकुछ दिया है न दिया होता तो मैं आगे देने वाला कौन हूँ?

★ भक्त सेवा, सुमिरण, सत्संग करते हुए इस जीवन की यात्रा को तय करता है। अपना उद्धार करता है औरों का कल्याण भी।

★ भक्त हर हाल में दातार के रंग में रहता है, उतार-चढ़ाव का असर ग्रहण नहीं करता बल्कि हर हाल में खुश रहता है।

★ हीरे के गुण ही अपने आप में उसको कीमती बनाते हैं। भक्त भी कर्म के द्वारा बोलता है। सबसे असरदायक बोल कर्म ही हुआ करता है।

★ सहनशीलता कमजोरी नहीं बल्कि शक्ति का सूचक है।

★ इन्सानों से समाज बनता है। इन्सान सुधरेगा तो समाज सुधरेगा।

★ नामधन के चाहवान विरले ही होते हैं और जो विरले होते हैं वहीं महान होते हैं।

★ भक्तजन समर्पित करके भी भरपूर रहते हैं और संसार छीनकर भी खाली रहता है।

★ अन्धकार और प्रकाश की भांति अभिमान और ज्ञान भी इकट्ठे नहीं हो पाते।

★ सूरज की रोशनी का लाभ वही लेता है जिसकी आंखें हैं।

★ एक सच्चा भक्त सत्य को अपनाकर इन्सानियत की बुलन्दियों तक पहुँच जाता है।

★ अज्ञानी सदा सोये रहते हैं और ज्ञानी सदा जागते रहते हैं।

★ स्वस्थ विचार ही मन को स्वस्थ करने में सहायक होते हैं।

★ हम, महापुरुषों का नाम लेते हैं। उनकी पूजा करते हैं। हम उनको मानने तक सीमित न रह कर उनकी (बात) भी मानें।

★ परमात्मा को रिझाना तभी सम्भव है, जब हम इन्सानों को भी अपनाएं।

★ जिसमें दास भावना है, धर्म के क्षेत्र में वही ऊँचा माना जा सकता है।

★ ज्ञान और कर्म के संगम से ही पृथ्वी स्वर्ग बनेगी।

★ यदि स्वयं सम्मान पाना है तो पहले दूसरे को सम्मान दें।

★ ज्ञान का सूर्य उदय होने पर प्यार का जन्म होता है और नफरत समाप्त हो जाती है। जबकि अभिमान के कारण भक्ति और सुमति से भी हाथ धोना पड़ता है।

– संकलन : रीटा (दिल्ली)

आलेख : कमल सोगानी

कहाँ से आता है मानसून?

साथियों! यह बात तो तुम अच्छी तरह जानते ही हो कि अच्छी बरसात के लिए अच्छे मानसून का उठना जरूरी है।

मानसून वे मौसमी पवनें हैं जिनकी दिशा एक वर्ष के सफर में दो बार परिवर्तित होती हैं। ये पवनें ग्रीष्म में महासागरों से महाद्वीप तथा शीत मौसम में महाद्वीपों से महासागरों की ओर प्रवाहित होती हैं।

ग्रीष्मकाल में सूर्य की उत्तरायण स्थिति के कारण पश्चिमोत्तर भारत में स्थाई तापीय निम्न वायुभार स्थापित हो जाता है तथा ऑस्ट्रेलिया के पास हिन्द महासागर में उच्च वायुभार रहता है। हवाएं ऑस्ट्रेलिया के पास से चलना प्रारम्भ होती हैं और कोरियालिस बल के प्रभाव से भूमध्य रेखा को पार करते समय अपनी दिशा में दाहिने मुड़कर प्रवाहित होती हैं।

ये मानसूनी हवाएं हमारे देश के दक्षिणी भाग की बनावट में विभाजित होकर पूर्वी तथा पश्चिमी भागों से भारत में प्रवेश कर वर्षा करती हैं। इन दो शाखाओं में बंगाल की खाड़ी की शाखा और अरब सागर की शाखा शामिल है।

वर्तमान में मानसून की विविध यात्राओं पर 17वीं सदी में फ्रेंच यात्री सर 'बोर्नियर टेम' ने मेघों के रहस्यमय कार्यकलाप का सूक्ष्मता से अध्ययन किया था। बोर्नियर के अनुसार मानसून विभिन्न दिशाओं से आते हैं और उनकी सघनता उनकी दिशा पर निर्भर करती है। मानसून रास्ते में बड़े-बड़े पर्वतों के रोक लेने से रास्ता बदल लेते हैं और अधिक सघन वातावरण वाले क्षेत्रों में प्रवेश कर बरसने लगते हैं।

बरसात में कई बार काले मतवाले मेघों को निहारने से ऐसा प्रतीत होता है कि उनसे बर्फ या पानी की वर्षा हो रही है, लेकिन उनकी वर्षा का आभास जमीन तक नहीं होता। ऐसा इसलिए होता है कि बीच की गर्म हवा के कारण पानी वाष्प बन जाता है या जमीन तक पहुँचते-पहुँचते पानी की बूंदें छोटी होने से हवा में विलीन हो जाती हैं।

बृहस्पति के चंद्रमा पर तूफानी वातावरण

वाशिंगटन। आठ साल तक बृहस्पति की परिक्रमा करने वाले नासा के गैलीलियो अंतरिक्षयान से मिली जानकारी के मुताबिक उसके चंद्रमा गनीमेड पर तूफानी वातावरण का पता चला है। नासा के अंतरिक्षयान को बृहस्पति के चंद्रमा पर कई नई चीजों का पता चला है जिनमें गनीमेड के आसपास चुंबकीय वातावरण की जानकारी शामिल है जो बृहस्पति के खुद के चुंबकीय क्षेत्र से अलग है।

मिशन 2003 में पूरा हो गया था लेकिन नए सिरे से जुटाई गई जानकारी से बृहस्पति के चंद्रमा के वातावरण को लेकर नये तथ्यों का खुलासा हुआ है जो सौरमंडल के दूसरे ग्रहों के चंद्रमाओं से अलग है।

नासा के गोडार्ड स्पेस फ्लाइट सेंटर के ग्लिन कोलिंसन ने कहा– हम 20 साल से ज्यादा समय से वैसे डेटा का अध्ययन कर रहे हैं जो कभी प्रकाशित नहीं हुआ। हमें ऐसी जानकारी मिली है कि प्लाज्मा की बारिश और बृहस्पति एवं गनीमेड के चुंबकीय वातावरणों के बीच एक विस्फोटक चुंबकीय घटना के कारण दोनों के बीच प्लाज्मा के मजबूत प्रवाह होने से चंद्रमा की बर्फीली सतह से कण फूटे। वैज्ञानिकों का मानना है कि ताजा जानकारी चंद्रमा के राज के खुलासे के लिहाज से महत्वपूर्ण है जिनमें गनीमेड के अरूणोदय (भोर) के समय बेहद चमकीले होने जैसे राज शामिल हैं। **(भाषा)**

दुनिया का पहला थ्रीडी प्रिंटेड ब्रिज

एम्सटर्डम (नीदरलैंड्स)। यह दुनिया का पहला थ्रीडी प्रिंटेड फुटओवर ब्रिज है। इसे नीदरलैंड की टेक स्टार्टअप कंपनी एमएक्स3डी ने बनाया है। ब्रिज को बनाने में 4 रोबोट को 6 महीने लगे हैं। इसे 2019 में शहर की सबसे पुरानी नहर पर लगाया जाएगा। यह दुनिया का सबसे बड़ा थ्रीडी प्रिंटेड मैटल स्ट्रक्चर भी है। ब्रिज में लगे सेंसर परफॉर्मेंस पर नजर रखते हैं। विस्थापन, तनाव, वाइब्रेशन एयर क्वालिटी और तापमान मापते हैं। इस डाटा से ब्रिज की सेहत का पता चलता है। इससे अगले प्रोजेक्ट में जरूरी सुधार करने में आसानी होगी।

इसे बनाने में 4,500 किलो स्टेनलेस स्टील का इस्तेमाल किया गया है। इसमें 36 लाख फुट तार का उपयोग हुआ है। इस ब्रिज की लम्बाई 12.5 मीटर तथा चौड़ाई 6.3 मीटर है। फिलहाल इस पर लोड टेस्ट किए जा रहे हैं।

– संकलनकर्ता : बबलू कुमार

बाल कहानी : अभय खरे

संगत का फल

किसी नगर में एक बढ़ई रहता था। उसका नाम था रामदास। बढ़ई रोज लकड़ी काटने जंगल में जाता था। साथ में अपना खाना ले जाता था।

उसी जंगल में एक शेर था। उसके दो पिछलगुवे थे। एक भेड़िया और दूसरा कौआ। दोनों बहुत धूर्त थे।

एक दिन शेर ने बढ़ई को देखा। शेर ने सोचा शिकार मिला। बढ़ई ने शेर को देखा तो उसके होश उड़ गये। हिम्मत बांधकर बढ़ई बोला– आओ शेर भाई, भोजन करो। मेरी पत्नी यानी तुम्हारी भाभी ने बड़े प्रेम से खाना पकाया है।

शेर बोला– भले आदमी मैं एक जंगली जीव हूँ। मैं अनाज कैसे खा सकता हूँ। पर तुमने बड़े प्यार से कहा है। इसलिए मैं तुम्हारा भोजन चख भर लूंगा।

बढ़ई ने मीठी, नमकीन और मसालेदार चीजें शेर को खाने को दीं। शेर खुश हो गया। उसने बढ़ई से कहा– डरो मत। बेखटके जंगल में आया करो। बढ़ई ने भी शेर से रोज खाना खाने के लिए आने को कहा।

शेर और बढ़ई की दोस्ती चल पड़ी। शेर को बढ़िया चीजें खाने को मिलती। उसने शिकार करना छोड़ दिया।

अब भेड़िया और कौआ भूखे रहने लगे। एक दिन कौए ने शेर से पूछा– आप रोज कहाँ जाते हो? आजकल क्या खाते हो?

शेर ने बात को टालना चाहा पर भेड़िया और कौआ जिद्द करने लगे। तब शेर ने पूरी बात बता दी। शेर ने कहा– एक आदमी से मेरी दोस्ती हो गयी है। उसकी पत्नी मजेदार खाना पकाती है। वह मुझे रोज खाना लाकर खिलाता है।

भेड़िए और कौए ने कहा– इस आदमी को मार डालो। कई दिनों तक भरपेट खाने को मिलेगा।

शेर ने कहा– ऐसा नहीं होगा। वह आदमी मेरा दोस्त है। वह मुझे भोजन कराता है मैंने उसे वचन दिया है। उसका अहित मैं नहीं कर सकता। हाँ, मैं तुम लोगों के लिए भी कुछ खाना मंगवा दूंगा। वे दोनों राजी हो गये।

दूसरे दिन तीनों बढ़ई की खोज में निकले। बढ़ई ने दूर से ही शेर और उसके साथियों को आते देखा। वह समझ गया कुछ गड़बड़ है। बढ़ई फौरन एक ऊँचे से पेड़ पर चढ़ गया।

शेर बोला– मैं तुम्हारा पुराना दोस्त हूँ। मुझे देखते ही पेड़ पर क्यों चढ़ गये। घबराओ मत। नीचे उतर आओ। पर बढ़ई पेड़ पर से नीचे न उतरा।

उसने कहा– मैं तुम्हारे धूर्त दोस्तों का भरोसा नहीं कर सकता।

आखिरकार हारकर शेर, गीदड़ एवं कौआ वापस चले गये।

–बदनाम दोस्तों के कारण शेर को एक अच्छा दोस्त खोना पड़ा।

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

कैसे वफादार हो? चोर भीतर आ रहा है, तुम भौंकते भी नहीं! अरे मालिक को जगाओ।
कुत्ता फिर भी भौंकने को तैयार नहीं हुआ–
मस्त होकर सो जाओ। मालिक हमारा ध्यान नहीं रखता तो हम क्यों ध्यान रखें। चोरी हो जाएगी तभी उसकी अक्ल ठिकाने आएगी!
अरे! बेवकूफ़! चोर भीतर आ गया है। तुम अपने कर्तव्य का पालन करो। भौंको! मालिक को जगाओ।
मुझे मेरा काम मत सिखाओ! चुप रहो।
तुम नहीं भौंकोगे तो मालिक को मैं ही जगा देता हूँ। मैं मालिक का नुकसान होते नहीं देख सकता।

कुत्ते के रोकने पर भी गधा नहीं माना। वह जोर-जोर से रेंकने लगा-
ढैंचू ...
धोबी की आँख खुली। आधी रात को गधे को रेंकते पाकर उसे गुस्सा आ गया। और डंडा लेकर उसने गधे को पीट डाला-
सारी नींद खराब कर दी। ले मजा चख।

हाय! मैं मर गया! मालिक ने मुझे बहुत मारा।
चोर धोबी के पुनः सो जाने तक छिपा रहा और मौका मिलते ही चोरी करके भाग गया।
हाय! मैं तो लुट गया मेरा सारा गहना चोरी हो गया।
जब चोर चोरी कर रहा था। तो तुम भौंके क्यों नहीं?
मैंने तो मालिक को जगा कर चोरी से बचाने की कोशिश की थी पर मालिक ने मेरा ही कचूमर निकाल दिया।
दोस्त! मुझे माफ कर दो। भविष्य में ऐसी गलती नहीं करूगा। अपने कर्तव्य का सही से पालन करूगा।
शिक्षा : जिसका काम उसी को साजे...

जानकारी : किरण बाला

उड़ने वाली कार और मोटर साइकिल

हवाईजहाज के आगमन के साथ ही इंसान उड़ने वाले अन्य वाहनों की भी कल्पना करने लगा था। फिल्मों में तो ऐसे वाहन अक्सर देखने को मिलते हैं। असली दुनिया में इसे साकार करने में लगी दो कम्पनियों में अपनी उड़ान कारों को पहले बाजार में लाने की होड़ मची है।

कुछ वर्ष पहले अमेरिकी कम्पनी टेराफ्यूगिया ने उड़ने वाली टीएफ-एक्स मॉडल नामक कार को 2012 तक बाजार में उतारने की घोषणा की थी। लेकिन टेराफ्यूगिया के अनुसार इसमें 12 वर्ष का समय और लगेगा। चार सीट वाली यह कार हाइब्रिड होगी और सड़कों पर चलने के अलावा इसमें लम्बवत् (वर्टिकल) उड़ान भरने और उतरने की खूबी भी होगी। उड़ान भरने में सहायक इसके पंख बटन दबाते ही खुल जाएंगे और प्रोपेलर हेलिकॉप्टर की तरह इसे ऊपर उठाएंगे। टेराफ्यूगिया के अनुसार एक औसत चालक को टीएफ-एक्स का संचालन सीखने में केवल चार घंटे का समय लगेगा।

वहीं दूसरी ओर, एयरोमोबिल नामक कम्पनी ने दावा किया है कि उसकी निर्मित उड़नकार का प्रोटोटाइप बीस वर्ष की मेहनत के बाद तैयार हो चुका है। उड़ते समय इसकी गति 124 मील प्रति घंटा होगी और सड़कों पर यह 99 मील प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ेगी।

वैज्ञानिकों ने ऐसी मोटरसाइकिलें बना ली हैं जो सड़कों पर दौड़ने के साथ-साथ हवा में उड़ेंगी भी। जी हाँ, अमेरिकी वैज्ञानिक लैरी नीव द्वारा पट्टियों वाली सुपर स्काई मोटरसाइकिल में 582 सीसी का इंजन और 68 इंच के तीन ब्लेड लगाए गए हैं। यह मोटरसाइकिल 58 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा में 20 फीट की ऊँचाई तक उड़ान भर सकती है। एक बार ईंधन भर जाने के बाद यह पांच घंटे तक हवा में उड़ सकती है।

इस फ्लाइंग मोटरसाइकिल की कीमत 40.5 लाख रुपये हैं। इसे चलाने के लिए पायलट का लाइसेंस होना जरूरी है।

चैक गणराज्य की राजधानी प्राग में 12 जून 2013 को उड़ने वाली बाइक का प्रदर्शन हुआ। फ्लाइंग बाइक का निर्माण चैक डिजाइनरों एवं फ्रेंच कम्पनी ने किया है। प्राग के लेटनेनी केयर ग्राउंड के हॉल में प्रदर्शित इस बाइक में 6 अत्याधुनिक हॉरिजॉन्टल प्रोपेलर तथा इलेक्ट्रिक मोटर लगी है। इसने रिमोट कंट्रोल के जरिए पांच मिनट की उड़ान भरी। इस बाइक का वजन 95 किलोग्राम है।

ब्रिटेन में स्टेमफोर्ड निवासी कोलिन फुर्ज फिल्म निर्माता, इन्वेंटर, स्टंटमेन और यूट्यूबर हैं। वे अपने प्लम्बिंग के बिजनेस से समय निकालकर ऐसी चीजें बनाते हैं, जिनके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता। हाल में ही उन्होंने आश्चर्यजनक होवर बाइक बनाई है यानि उड़ने वाली मोटरसाइकिल। इसमें दो इंजन हैं, आगे वाला डाउन साइड है जबकि पीछे वाला अप साइड। उनका यह प्रोजेक्ट फोर्ड कम्पनी को भी पसन्द आया, वह इसकी प्रायोजक बन गई है।

कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

अब तो करनी हमें पढ़ाई

खत्म हो गई छुट्टियां सारी,
मौज-मस्ती खूब मनाई।
फिर से खुल गये सभी स्कूल,
अब तो करनी हमें पढ़ाई।।

मेहनत हमें खूब है करनी,
आपस में ना करें लड़ाई।
मिलजुल कर हम रहना सीखें,
अब तो करनी हमें पढ़ाई।।

मात-पिता का कहना मानें,
प्रगति शिखर पर करें चढ़ाई।
नाम वतन का रोशन करना,
अब तो करनी हमें पढ़ाई।।

कविता : रूपनारायण काबरा

संगीत मधुर है किससे कम

आसमान से उतर धरा पर,
वर्षा आई छम छम छम।
बिजली कड़क कड़क कर चमके,
बादल बरसे झम झम झम।।

गली, सड़क पर नन्हें मुन्ने,
झूमें गायें खुश हैं हम।
नाले बहने लगे हैं सरपट,
कागज नाव चलाते हम।।

कितनी मोहक बरखा रानी,
कितना इसका रूप सुहाना।
सबको हरा भरा कर देती,
धरती बनती सुन्दरतम।।

रिमझिम वर्षा की बूंदों का,
संगीत मधुर है किससे कम।

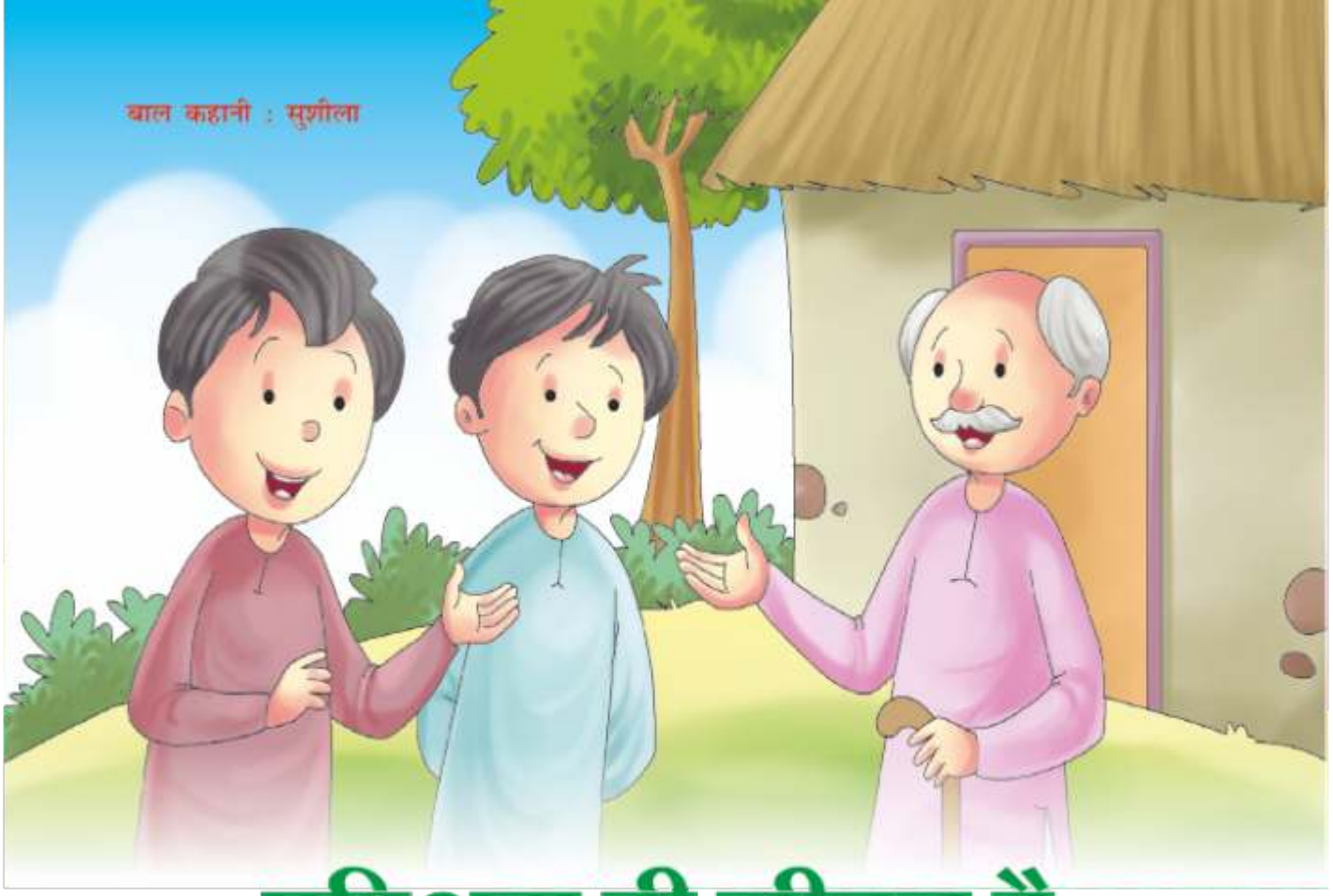

बाल कहानी : सुशीला

परिश्रम ही जीवन है

कृपाराम नामक एक व्यक्ति था। बड़ा ही नेक, ईमानदार और मेहनती। उसके दो लड़के थे। दोनों के दोनों आलसी, एक नम्बर के कामचोर व आवारा थे। कृपाराम बूढ़ा हो चला था। उसने उन दोनों लड़कों की शादी जैसे-तैसे अच्छे परिवार में करवा दी थी। दोनों लड़के दिनभर पड़े रहते और पत्नियां चिल्लाती रहती थीं। कभी अपने भाग्य को कोसती तो कभी अपने ससुर को। अब कृपाराम का दिमाग काम नहीं करता था। फिर भी वह सोचा करता कि इन्हें मेहनत की शिक्षा कैसे दी जाए?

बहुत सोच-सोचकर एक दिन कृपाराम ने तीर्थ-यात्रा पर जाने की तैयारी की।

जाते-जाते अपने बेटों से कहा– मैंने अपने खेत में कुछ रुपये-पैसे गाड़ दिये हैं। मेरी गैर-हाजिरी में जब तुम लोगों को जरूरत हो तो उस धन को खोदकर निकाल लेना। इतना कहकर कृपाराम अपनी तीर्थ-यात्रा पर चल दिया।

जब दोनों बेटों की पत्नियों ने सुना तो लालच की सीमा नहीं रही। वे दोनों अपने-अपने आलसी पतियों को लालच देती रहीं, कल्पनाओं के पुल बांधती रहीं। आलसी बेटों के मन में लालच और आलस का झगड़ा कुछ समय तक चलता रहा। अन्त में लालच का पलड़ा भारी रहा और दोनों भाइयों ने धन के लालच में खेत खोद डाला परन्तु

वहाँ पर कुछ नहीं था। वे दोनों बड़े दु:खी हुए और उन्होंने अनुभव किया कि पिताजी ने उनसे बेकार में ही मेहनत करवाई है।

कृपाराम ने पहले से ही योजना बना रखी थी। वापस आकर वे मुस्कुराते हुए खेत पर पहुँचे, देखा कि खेत पूरा खुदा हुआ है और दोनों बेटे एक तरफ उदास बैठे हैं।

–अरे! तुम उदास क्यों हो? कृपाराम बोला– तुमने तो अपने परिश्रम से पूरा खेत खोद डाला है अब इसमें बीज बो दो।

दोनों लड़कों ने अपने बूढ़े पिता कृपाराम की बात मान ली। परिणाम यह हुआ कि उनके खेत में इतनी फसल हुई, जितनी पहले कभी नहीं हुई थी।

दोनों भाइयों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उनकी पत्नियों की कल्पनाएं भी साकार होने लगीं।

यह सब दृश्य देखकर आखिर बूढ़े पिता कृपाराम ने अपने दोनों बेटों को दिखा दिया– परिश्रम ही जीवन में सफलता का मंत्र है।

लघुकथा : मदनेन्द्र

तीन चूहे

तीन चूहे थे। एक दिन उन्हें किसी बड़े डिब्बे में तेल की गंध मिली।

बस फिर क्या था तीनों ही उसके आसपास मंडराने लगे। पर तेल तो सतह से लगा हुआ था। चूहों ने सोचा बारी-बारी से एक-दूसरे की पूँछ पकड़कर नीचे उतरेंगे और अपने-अपने हिस्से का तेल पी लेंगे।

तीनों ने आपस में विश्वास दिलाया कि वे स्वार्थी नहीं बनेंगे।

सबसे पहले तेल पीने वाले चूहे ने सोचा तेल तो बहुत कम है क्यों न मैं ही सारा पी लूँ।

बीच वाले चूहे ने सोचा– अगर नीचे वाले ने सारा तेल पी लिया तो मेरे लिये कुछ भी नहीं बचेगा। क्यों न मैं कूदकर इससे पहले तेल पी लूँ। ठीक यही बात ऊपर वाले चूहों ने सोची, और फिर दोनों एक साथ कूद पड़े।

परिणाम यह हुआ कि तीनों चूहे उस डिब्बे में गिर गये और फिर कभी नहीं निकल सके। बिना सोचे समझे हमें भी कोई काम नहीं करना चाहिये।

इसीलिए कहा गया है कि –

लालच बुरी बला है

अनमोल वचन

★ आप आज जो करते हैं उस पर भविष्य निर्भर करता है।

★ प्रार्थना आत्मा की पुकार है इसे करो।
– महात्मा गाँधी

★ लक्ष्य के प्रति एकाग्र समर्पण लक्ष्य को पाने का एक मात्र साधन है।
– डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

★ प्राणी जो भी करे ईश्वर के लिए करे तो उसकी सभी क्रियाएं भक्ति बन जाती हैं।
– श्रीरामचन्द्र डोगरे

★ जो व्यक्ति मूर्खों के सामने विद्वान लगने की कामना करते हैं वे विद्वानों के सामने मूर्ख लगते हैं। **– क्विन्टिलियन**

★ जिस मनुष्य में कोमलता, सादगी और सरलता है वही धर्मात्मा है।
– सन्त कबीर

★ आज्ञा देने की क्षमता प्राप्त करने से पहले प्रत्येक व्यक्ति को आज्ञा पालन करना सीखना चाहिए। **– स्वामी विवेकानन्द**

★ सर्वोत्तम बात है सीखना। पैसा खो सकता है, सेहत और साहस साथ छोड़ सकता है लेकिन जो कुछ अपने मस्तिष्क में रखा है, वह हमेशा आपका ही बना रहता है। **– लुईस लामूर**

★ बुराई का सम्पर्क हमारी अच्छी आदतों को भी दूषित कर देता है। **– महाभारत**

★ हमारे सारे सपने सच हो सकते हैं, अगर हम साहसपूर्वक उसे पाने का प्रयत्न करते हैं।
– वाल्ट डिज्नी

★ विद्या के साथ जीवन का आचरण करना ही विद्वता है। **– सरदार पटेल**

★ अगर आप अपने आपसे मित्रता कर लें तो आप कभी अकेला महसूस नहीं करेंगे। **– मैक्सवेल माल्टज**

★ कम बोलना ही लाभदायक है।
– पारसमणि शास्त्र

★ जो ज्ञान मन को शुद्ध करता है, वही ज्ञान है। शेष अज्ञान है।
– रामकृष्ण परमहंस

★ कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनों का जिस जगह ऐक्य होता है वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। **– अरविंद घोष**

★ अन्याय का राज्य बालू की भीत है।
– जयशंकर प्रसाद

★ उत्तम शिक्षा कहीं से मिले तो लेने में संकोच नहीं करना चाहिए।

★ जो तुम्हें बुराई से बचाता है, नेक राह पर चलाता है और मुसीबत के समय तुम्हारा साथ देता है, वही तुम्हारा सच्चा मित्र है। **– चाणक्य**

– संग्रहकर्ता : रामअवध राम (गाजीपुर)

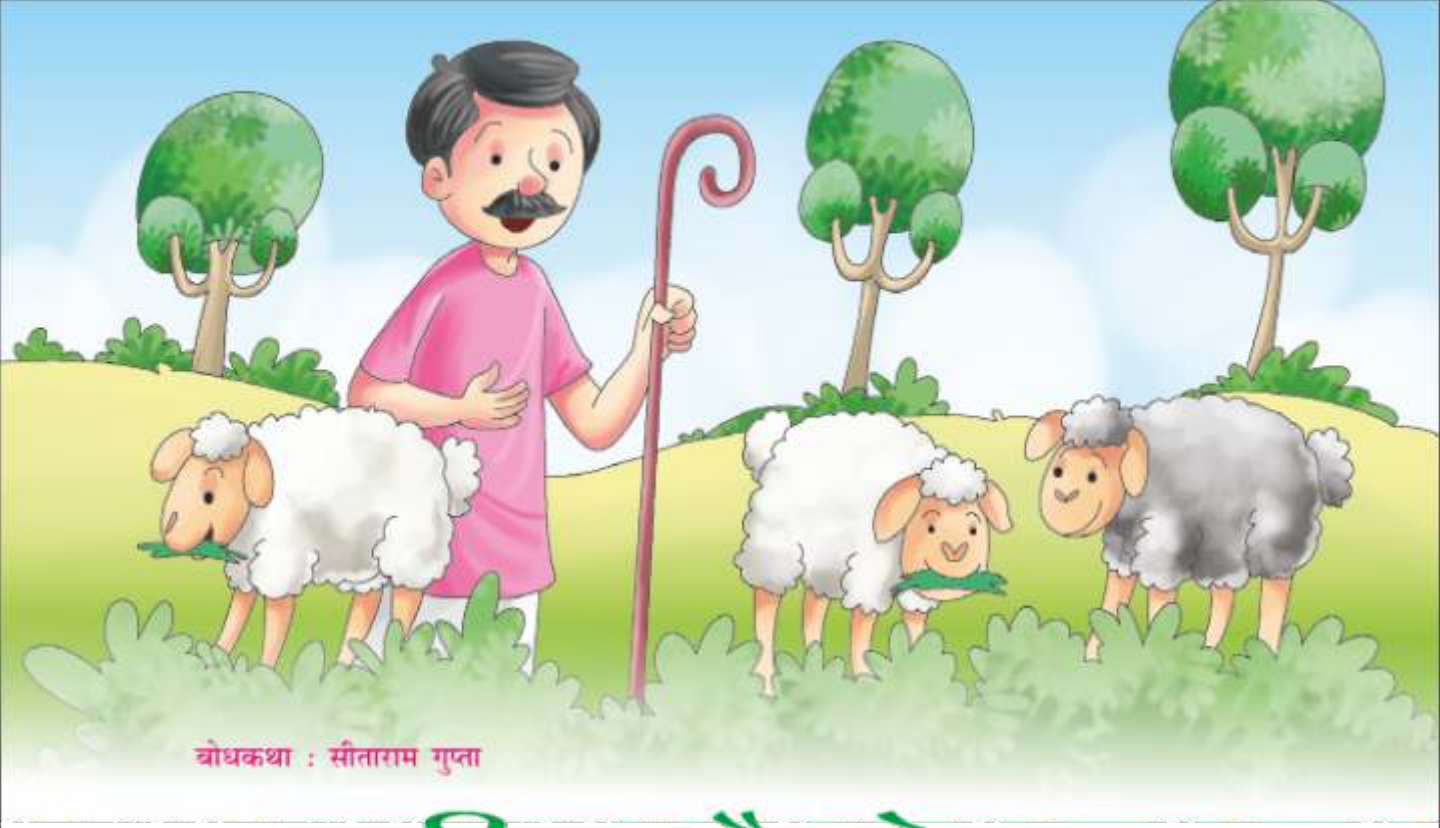

बोधकथा : सीताराम गुप्ता

गड़रिया और मेमना

एक गाँव में एक गड़रिया रहता था। जिसके पास कुछ भेड़ें थीं। एक दिन जब वह दिनभर अपनी भेड़ों को जंगल में चराने के बाद शाम को घर लौटा तो उसने अपनी सब भेड़ों को सावधानीपूर्वक एक बाड़े में बंद कर दिया सिवाय एक मेमने के। उस मेमने को कंधों पर उठाए हुए गड़रिया बाहर आया और उसे नहलाकर ताज़ा-ताज़ा हरी घास खिलाई। उसके बाद काफी देर तक वह उसे गोद में लेकर सहलाता रहा और उसके साथ खेलता रहा।

पास से गुजरने वाले एक महात्माजी अपने शिष्यों के साथ रुककर ये सब देखने लगे। उन्हें आश्चर्य हुआ कि एक मेमने के साथ ही ऐसा व्यवहार क्यों?

महात्मा गड़रिये के पास आया और पूछा, "भाई इस मेमने में क्या खास बात है जो इसकी इतनी सेवा और देखभाल हो रही है?"

गड़रिये ने कहा कि महात्माजी ये मेमना रोज जंगल में भाग जाता है और मुश्किल से मेरे हाथ आता है। मैं इसलिए इसकी ज्यादा सेवा और देखभाल कर रहा हूँ ताकि ये मेरे प्रेम के कारण मेरे पास ही रहे और जंगल में भटक न जाए। ये जंगल में भटक गया तो किसी जंगली जानवर का शिकार बन जाएगा। महात्माजी ने अपने शिष्यों को पास बुलाया और कहा, "देखो संसार में प्यार और सेवा ही ऐसी चीजें हैं जिसे हर प्राणी समझने में सक्षम है। मनुष्य के लिए तो यह अनिवार्य है। प्यार और देखभाल न मिलने के कारण ही लोग भटक जाते हैं और जो लोग भटक जाते हैं उन्हें प्यार और देखभाल से ही उचित मार्ग पर लाना संभव है।" ये प्यार ही है जो एक परिवार, समाज और राष्ट्र का निर्माण करता है। प्यार और देखभाल ही हमें हर प्रकार से सुरक्षित करने में सक्षम हैं।

सेहत (लेख) : राजकुमार जैन

गुणकारी जामुन

जामुन अकेला ऐसा फल है, जो देश के कोने-कोने में सुलभता से मिल जाता है। काले-काले, बड़े और रस-भरे मीठे जामुन देखकर भला किसका जी नहीं ललचा जाता? जामुन स्वादिष्ट और मनभावन होने के साथ-साथ सेहत के लिए बहुत फायदेमंद फल भी है। अनेक छोटे-बड़े रोगों में इसका उपयोग औषधि के रूप में किया जा सकता है। आयुर्वेद के अनुसार भी जामुन एक गुणकारी फल है। इसके अम्ल से वायु का नाश होता है तथा कषाय रस से कफ का नाश होता है। यह स्वाद में मीठी, कसैली, गुण में शीतल, रुचिकर, पाचक, पित्त, कफ तथा रक्तविकार नाशक है।

जामुन में सेहत भरी पड़ी है। इसमें निम्नलिखित पौष्टिक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं– जल 78.2 प्रतिशत, कार्बोज 19.7 प्रतिशत, प्रोटीन 0.7 प्रतिशत, लवण 0.4 प्रतिशत, वसा 0.1 प्रतिशत, कैल्शियम 0.2 प्रतिशत, फास्फोरस 0.7 प्रतिशत, रेशा 0.9 प्रतिशत।

जामुन में इतने पौष्टिक तत्वों की भरपूर उपस्थिति से साफ जाहिर है कि जामुन का फल सेहत के लिए कितना फायदेमंद है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जामुन का फल ही नहीं, जामुन के वृक्ष का प्रत्येक भाग रोगनाशक शक्ति रखता है। जामुन के वृक्ष की पत्तियां, छाल, जड़ आदि में औषधीय गुण विद्यमान होते हैं। जामुन की गुठली तक कई रोगों में उपचार के लिए दवा का काम दे सकती है।

जामुन के मौसम में जामुन का नियमित सेवन कर मधुमेह, खांसी, रक्त-दोष, वमन, पीलिया, कब्ज, पेटदर्द आदि रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है। जामुन कफ, पित्त, तिल्ली, वायुगोला और अतिसार में भी उपयोगी है। दांत एवं मसूढ़ों के रोगों में भी यह लाभकारी है।

जामुन खाने से पहले भली प्रकार धो लिया जाना चाहिए ताकि उस पर लगे हानिकारक तत्व पेट में न जा सकें। यथासंभव जामुन का सेवन भोजन के पश्चात ही किया जाना चाहिए। ऐसी लोकमान्यता है कि जामुन खाने के बाद उस पर दूध पीना सेहत के लिए हानिकारक है। इसलिए आप जामुन खाने के बाद एक घंटे तक दूध का सेवन न करें तो बेहतर रहेगा।

जामुन का सिरका भी गुणकारी तथा स्वादिष्ट होता है। इसे घर पर ही आसानी से तैयार किया जा सकता है। सिरका बनाने के वास्ते आप पके हुए तथा बिना दाग के बड़े-बड़े जामुन चुन लें। इन जामुनों को धोकर एक साफ मिट्टी के बर्तन में नमक मिलाकर रख दें। बर्तन का मुँह एक साफ धुले हुए कपड़े से बांधकर इस बर्तन को धूप में रख दें।

एक सप्ताह तक धूप में रखने के पश्चात इन जामुनों का रस साफ कपड़े से छानकर शीशे की बोतलों में भरकर ढक्कन लगाकर रख दें। जामुन का सिरका तैयार है। इसे जरूरत के अनुसार उपयोग

में लाएं। इस सिरके का उपयोग आप सलाद में आसानी से कर सकते हैं। इसके अलावा मूली, गाजर, शलजम, प्याज, मिर्च आदि सब्जियों के अचार भी आप इस जामुन के सिरके में डाल सकते हैं।

आइए, जामुन के वृक्ष की पत्तियों, गुठली आदि के औषधीय गुण जानें :—

पेचिश के रोगी को जामुन के रस में चीनी मिलाकर पिलाइए।

यदि आपको कब्ज की शिकायत रहती है अथवा पेट संबंधी अन्य कोई शिकायत रहती है तो जामुन का सिरका और पानी बराबर-बराबर मात्रा में पिएं। सप्ताह भर में आप फायदा महसूस करेंगे।

मुँह में छाले हो जाने पर जामुन का रस छालों पर लगाएं। शीघ्र ही छाले मिट जाएंगे।

कै अधिक होने पर जामुन का रस का सेवन करें तथा जामुन खाएं। आश्चर्यजनक रूप से लाभ होगा।

जामुन की छाल का काढ़ा बनाकर पीने से पुराने दस्त बंद हो जाते हैं। इस काढ़े के सेवन से मसूढ़ों की सूजन भी कम हो जाती है।

यदि आप मुँहासों से परेशान हैं तो जामुन की गुठलियों को सुखाकर महीन पीसकर एक शीशी में रख लें। सप्ताह भर तक रात को सोते समय एक चुटकी चूर्ण गाय का दूध मिलाकर मुँहासों पर लगाएं। सवेरे चेहरा भली प्रकार से ठंडे पानी से धो डालें। मुँहासे मिट जाएंगे।

यदि आपकी पाचन-शक्ति बिगड़ गई है तथा आपको ठीक से भूख नहीं लगती तो कुछ दिनों तक नियमित भूखे पेट जामुन खाएं। भूख खुल जाएगी।

जामुन के पत्तों की भस्म को मंजन के समान प्रयोग करने से दांत और मसूढ़े मजबूत होते हैं।

तंग जूता पहनने की वजह से पैरों पर पड़े छालों पर जामुन की गुठली घिसकर लगाने से वहाँ ठंडक पड़ जाती है तथा छाले ठीक हो जाते हैं।

जामुन की गुठली सुखाकर उसका चूर्ण बना लें तथा दूध के साथ इस चूर्ण को मिलाकर फोड़े-फुंसियां पर लगाएं।

जामुन के इतने औषधीय गुणों को देखते हुए आज से ही जामुन का नियमित सेवन प्रारम्भ कर दें।

• • •

प्रेरक-प्रसंग : अंजना त्रिपाठी

फूल और कांटा

बाग के रंग-बिरंगे फूलों से मीठी सुगंध बह रही थी। इसी वातावरण में एक फूल और कांटे की आपस में बातचीत हो रही थी। तभी अचानक तेज हवा का एक झोंका आया और फूल की कुछ पंखुड़ियां टूटकर नीचे गिर गई। ये देखकर कांटा जोर से हँसने लगा।

उसने फूल से कहा– देखा, तुम कितने कमजोर हो। हवा से ही झड़ जाते हो। पर मैं कितना शक्तिशाली हूँ। यदि चुभ जाऊँ तो बलवान आदमी भी व्याकुल हो जाता है। तुम्हें तो कोई रौंद डाले तब भी कुछ नहीं कर सकते हो। उसकी बातें सुनकर फूल ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसे शान्त देखकर कांटा कहकहे लगाकर हँसने लगा।

कुछ समय बाद वहाँ बाग का मालिक आया। वह एक गुस्सैल आदमी था। वह टहलते हुए फूलों की क्यारी के पास आया। उसने एक फूल तोड़कर कोट में लगा लिया। फिर वह पूजा के लिए फूल तोड़-तोड़कर टोकरी में रखने लगा। तभी अचानक घमण्डी कांटे को शरारत सूझी और वह उसके हाथ में चुभ गया। वह आदमी दर्द से कराह उठा। उसे क्रोध आ गया और उसने तुरन्त माली को कांटे की झाड़ी उखाड़कर जला डालने का आदेश दे दिया।

अब कांटा आंसू बहा रहा था और फूल मन ही मन मुस्कुरा रहा था।

–यह सच है कि दुष्ट और घमण्डी आदमी का यही अन्त होता है। सज्जन व्यक्ति भले ही धन और बल से कमजोर हों पर उसका हर जगह सम्मान होता है। अतः अपनी शक्ति पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

दो कविताएं : कमलसिंह चौहान

वर्षा की बूंदें

गरजा आसमान में बादल,
लगता जैसे बिखरा काजल।
बूंदें टपकी ठंडी ठंडी,
टीना गीता झूमी पायल।

खुश हो गई नदी की मछली,
आकर किनारे देखो उछली।
जल मुर्गी ने मारी डुबकी,
मेंढक हो गया जल से घायल।

चिड़िया झूमी चीं चीं करती,
उछलकूद बंदरिया करती।
पशु पक्षी सब नाच रहे,
कुहुक उठी जंगल में कोयल।

डाली डाली लहराती है,
वर्षा रानी जब आती है।
ढोल नगाड़े से बजते हैं,
जैसे छनक उठी है पायल।

बादल का घूँघट

आसमान में छाये बादल,
लेकर आए सागर का जल।
बिजली तड़की बादल गरजा,
बजती छन छन जैसे पायल।

सूरज भी देखो नहीं दिखता,
बादल के घूँघट में रहता।
ठंडी ठंडी हवा बही अब,
गरमी हो गई कितनी घायल।

तोते चील कबूतर चहके,
मेंढक मछली के पग बहके।
गिरता पानी नदियां भर गई,
हर कोई हो गया इसका कायल।

सज गई है फूलों की क्यारी,
लगती वर्षा कितनी प्यारी।
जल सबके जीवन का रक्षक,
सबको भाते काले बादल।

बाल निबंध : अंकुश्री

हमारी नदियां

कलकल-छलछल बहती नदी देखने में बड़ी अच्छी लगती है। उसमें छपाछप स्नान करने में बड़ा मजा आता है। संभव है, तुमने भी किसी नदी में अवश्य डूबकियां लगायी हों। सिर्फ स्नान ही नहीं, पीने के पानी के लिये भी नदियों का खूब उपयोग होता है। नदी में तैरना एक अच्छा और स्वास्थ्यकर व्यायाम है।

हमारी सभी प्राचीन सभ्यताएं नदियों के किनारे पनपी हैं। नदियों के किनारे बसने से पीने का जल तो मिलता ही है, सिंचाई की भी सुविधा प्राप्त हो जाती है। नदियों के किनारे सभ्यता विकसित होने का एक प्रमुख कारण यातायात की सुविधा भी है। पहले थल मार्ग की तुलना में जल मार्ग से आना-जाना या माल ढ़ोना आसान होता था। आज भी जल मार्ग से नाव और जहाज द्वारा सामान ढ़ोने और सवारियों के आने-जाने का काम होता है।

उपयोगी होने के कारण नदियां धर्म से भी जुड़ी हुई हैं। अनेक तीज-त्योहारों पर नदियों के किनारे मेले का आयोजन होता है। नदी-स्नान की अनेक तिथियां बनी हुई हैं। ऐसी तिथियों पर रोज नहीं जा पाने वाले दूर-दराज के लोग भी नदी स्नान करने के लिये उमड़ पड़ते हैं।

हालांकि नदियों का रूप अब वह नहीं रहा, जो कुछ दशक पूर्व तक था। बढ़ती आबादी, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ने नदियों को बुरी तरह प्रदूषित कर दिया है। देश के अधिकतर प्रमुख नगर नदियों के किनारे ही बसे हैं। शहर दिन पर दिन आबादी के बोझ से दबते जा रहे हैं। बढ़ी हुई आबादी का कूड़ा-कचरा नदियों में बहाये जाने से उसका पानी प्रदूषित हो जाता है। कई नदियों की स्थिति ऐसी हो गयी है कि उनका जल कुछ जगह पीने या स्नान करने योग्य भी नहीं बच पाया है।

उद्योगों का निर्माण भी नदियों के निकट किये जाने की मजबूरी रही है। इससे उद्योगों का उच्छिष्ट, कचरा आदि नदियों में बहा दिये जाने में सुविधा रहती थी। इससे नदियों का औद्योगिक प्रदूषण हो जाना स्वाभाविक है। उद्योगों का सूखा या तरल कचरा निकटवर्ती नदी में बहा दिये जाने की परंपरा-सी रही है। इससे नदियों का जल बुरी तरह प्रदूषण हो जाता है। यह एक अच्छी बात है कि अब ऐसे उद्योगों को नियंत्रित करने की कोशिश की जा रही है।

नदियों के किनारे लगने वाले मेलों या हाटों से भी प्रदूषण फैलता है। पर्व-त्योहारों के अवसर पर भीड़-भड़ाके के अतिरिक्त नदियों में दीप, फूल, मूर्तियां आदि प्रवाहित या विसर्जित कर दिये जाते हैं। इससे नदियां प्रदूषित हो जाती हैं।

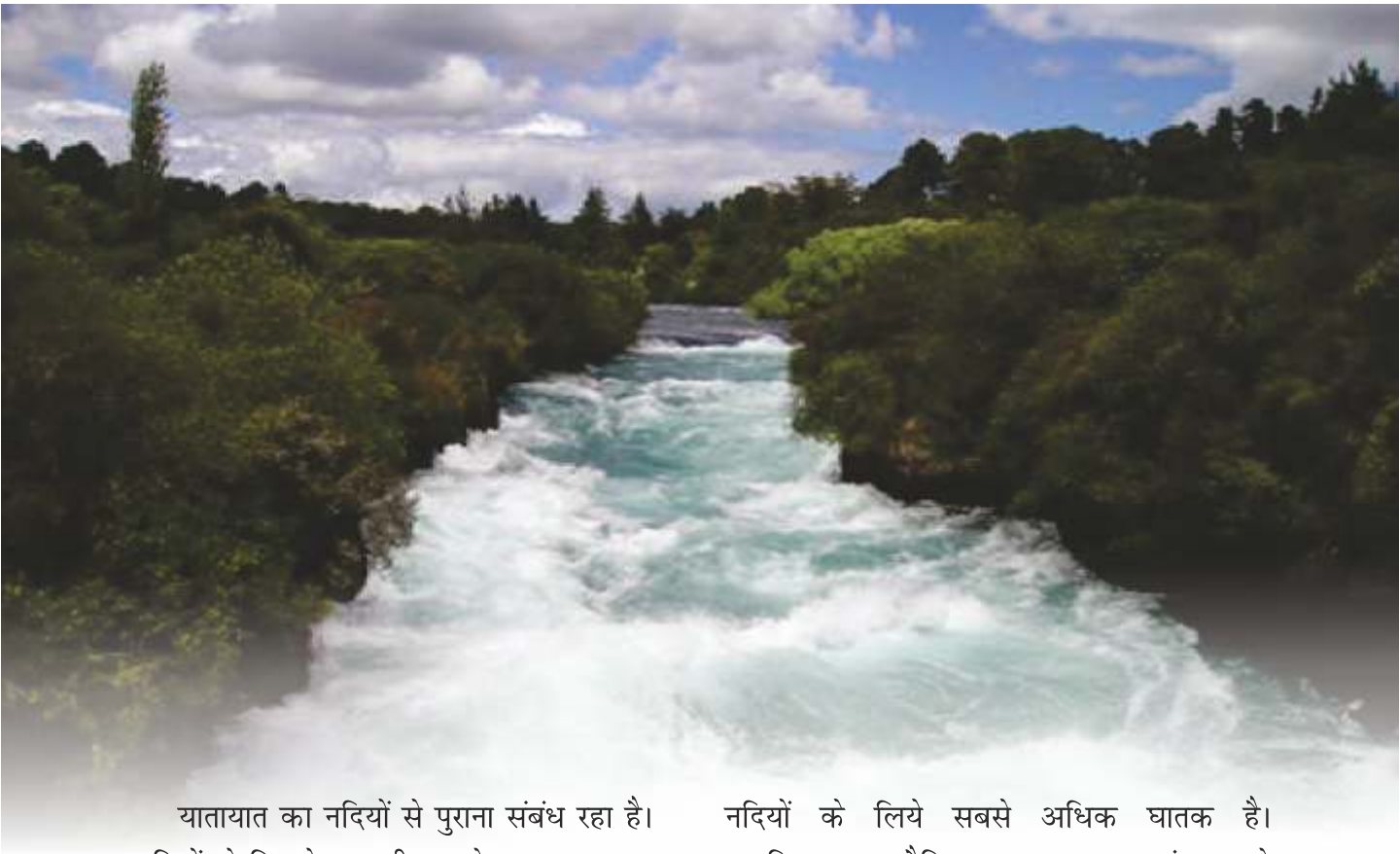

यातायात का नदियों से पुराना संबंध रहा है। नदियों के किनारे आबादी पनपने का एक प्रमुख कारण यह भी रहा है। बेड़ा, नाव, मोटर बोट, जहाज आदि के माधयम से नदियों को पाड़ किया जाता है। यही नहीं, नदियों से होकर दूर-दूर तक यात्रएं भी की जाती हैं। इनका असर नदियों के प्रदूषण पर पड़े बिना नहीं रहता। यात्रियों द्वारा उपयोग की गई वस्तुओं को नदियों में फेंकने से प्रदूषण फैलता है। मोटरचालित जलयानों से निकले कचरे से भी नदियां प्रदूषित हो जाती हैं।

शहरों में चलने वाले अन्य वाहनों का भी नदियों के प्रदूषण पर असर पड़ता है। अधिकतर वाहन-चालक अपने वाहन की सफाई नदियों में ही करते हैं। वास्तविकता यह है कि नदियों को लोगों ने अपनी हर तरह की गंदगी धोने का साधन मान बैठा है। लोगों की यह मानसिकता नदियों के लिये सबसे अधिक घातक है। मानसिकता या नैतिकता का सम्बन्ध संस्कार से होता है। माता-पिता या शिक्षक द्वारा संस्कार का बीज बचपन में ही बो दिया जाता है। इसलिये तुम बच्चों को संस्कार की आदत सीखने के प्रति सचेत रहना चाहिये। तभी नदियां हों या पर्यावरण की दूसरी अन्य इकाइयां, उन्हें तुम प्रदूषणमुक्त रख सकते हो।

पक्षी जगत (लेख) : किरण बाला

जल पक्षी हंस

प्रकृति ने धरती पर तरह-तरह के जीव-जंतुओं की रचना की है। इन्हीं में से एक है हंस। हालांकि हंस उड़ते भी हैं, लेकिन इन्हें जल पक्षी इसलिए कहा जाता है कि ये अपना अधिकांश जीवन शांत जल में ही बिताते हैं।

हंस एनाटिडेई परिवार का सबसे बड़ा जल पक्षी है। इसकी कोई आठ प्रजातियां होती हैं, जिनमें से पांच सफेद होती हैं। हंस की एक प्रजाति ऐसी भी है जिसे कम बोलने वाला हंस कहा जाता है। इस प्रजाति के हंस यदाकदा फुंकार मारते हैं या नाक से धीमी आवाज निकालते हैं। गूंगाहंस उत्तरी अमेरिका में यूरोप से आया। आमतौर पर ये पार्कों की झीलों या छोटे तालाबों में देखे जा सकते हैं। सफेद हंस उत्तरी क्षेत्रों में पाए जाते हैं। पश्चिम कनाडा और उत्तरी अमेरिका में मिलने वाले हंस 100 सेंटीमीटर तक लम्बे हो सकते हैं। ट्रम्पटर हंस की लम्बाई इनसे भी अधिक 115 सेंटीमीटर तक होती है और पंखों का विस्तार 225 सेंटीमीटर तक हो सकता है। काले हंस की प्रजातियां आस्ट्रेलियां में मिलती हैं। इसी प्रकार नारंगी टांगों वाले हंस दक्षिणी अमेरिका में मिलते हैं।

हंस की गर्दन लम्बी, पंजे चौड़े तथा शरीर भारी होता है। नर और मादा हंस दिखने में एक समान लगते हैं। पानी में तैरते हंस काफी अच्छे लगते हैं। प्रायः ये जोड़ों में तैरते हैं। ये अपनी चोंच पानी में डालकर सिर से सिर मिलाकर किलोल करते हुए तैरते हैं। नर और मादा अपने गले से अलग-अलग तरह की आवाजें निकालते हैं या सीटी बजाते हैं।

हंस उड़ने में भी माहिर हैं लेकिन ये तैरते हुए ग्लाइड करके उड़ते हैं। यानी पहले कुछ देर पानी की सतह पर भागते हैं और फिर उड़ान भरते हैं।

मादा हंस एक बार में 5 या 6 अंडे देती है, जो पीले रंग के होते हैं। ये घोंसला बनाने की बजाय घासफूस के ढेर पर अपने अंडे रख देती हैं। इन अंडों की सुरक्षा का जिम्मा नर हंस पर होता है। जब अंडों से शिशु बाहर निकल आते हैं तो कुछ ही समय में वे पानी में तैरने लगते हैं।

हंसों की उम्र काफी लम्बी होती है। जंगली वातावरण में भले ही ये 20 साल जीते हैं, लेकिन पालतू हंस 50 साल तक जी सकते हैं। जल की सतह या उसके नीचे उगने वाले पौधे ही इनका मुख्य भोजन है।

हंस 108 किलोमीटर प्रति घंटे की उड़ान क्षमता हासिल कर सकते हैं। हंस सबसे ऊँची उड़ान भी भरते हैं। एक बार तो स्कॉटलैंड के ऊपर एक हवाई जहाज के पायलट ने 8230 मीटर की ऊँचाई पर आइसलैंड की तरफ से आते और आवाज करते हुए 30 हंसों का समूह देखा था। ये हंस रडार के पर्दे पर भी दिखे थे।

कहानी : दीपक कुमार

मुझसे नहीं हो पाएगा

सुमित पढ़ने में काफी तेज था। इस बार के राज्य स्तर पर होने वाली छात्रवृत्ति प्रतियोगिता में वह प्रथम स्थान पर चुना गया था। उसे एक बड़े समारोह में प्रमाण-पत्र दिया गया था। उसके माता-पिता, दोस्त सारे रिश्तेदार सभी खुश थे। साथ ही साथ सभी की शुभकामनाएं उसे प्राप्त हो रही थीं।

इस खुशी में सुमित के पिता ने अपने घर में कुछ लोगों को खाने पर बुलाया था। दोस्तों ने तो खूब छककर खाना खाया। माँ ने देखा कि पार्टी में सभी खुश नजर आ रहे हैं। सभी दोस्त आपस में मिल-बैठकर बातें कर रहे हैं। मगर सुमित तो वहाँ है ही नहीं। माँ ने खोजते-खोजते छत पर देखा कि वह चुपचाप अकेले बैठा हुआ है।

इस शुभ अवसर पर सुमित को बधाई देने के लिए कोई खोजता तो वह आकर प्रणाम कर फिर एकांत में खो जाता।

रात के करीब बारह बज रहे होंगे। घर का वातावरण एकदम शांत हो गया। सभी लोग अपने-अपने घर को प्रस्थान कर चुके थे। इस पार्टी के आयोजन की सारी व्यवस्था खुद सुमित ने ही की थी। इस कारण उसका थकना स्वाभाविक था, किन्तु फिर भी नींद उसकी आँखों से कोसों दूर थी। वह बार-बार उठकर पानी पीता और फिर लेट जाता।

माँ ने देखा कि सुमित आज बार-बार उठ क्यों कर रहा है? कहीं उसकी तबियत तो खराब नहीं है? माँ सुमित के कमरे में गई तो वह माँ को देखकर मुस्कुरा दिया और एकटक से अपनी माँ को देखता रहा।

सुमित के चेहरे पर बनावटी मुस्कान को देखकर माँ पूछ बैठी– क्यों बेटा गला इतना क्यों सूख रहा है?

सुमित बोला– आओ माँ हम लोग बिछावन पर बैठकर बातें करते हैं।

माँ प्यार से बोली– देख बेटा, जो तन और मन दोनों से सुखी रहता है, संसार का वही व्यक्ति सबसे स्वस्थ कहलाता है।

–देखो माँ, एक सप्ताह बाद शतरंज की प्रतियोगिता होने वाली है। मुझे स्कूल के अध्यापकों व दोस्तों के जिद्द करने पर जिला स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता फार्म भरना पड़ा। सब चाहते हैं कि जैसे मैं राज्य स्तर के मेधावी छात्रों में से चुना गया हूँ। वैसे ही मुझसे सबने उम्मीद लगा रखी है क्योंकि इसमें भी दिमाग व मन दोनों का काम है। जैसे-जैसे

प्रतियोगिता नजदीक आती जा रही है मेरा मन डरता ही जा रहा है।

–अरे इसमें डर कैसा?

–अगर नहीं...। सुमित संकोच करते हुए बोला।

–अच्छा तुम्हें पढ़ाई में कैसे सफलता मिली?

सुमित अचम्भित भरी दृष्टि से माँ की ओर देखते हुए बोला– क्योंकि मैंने सारी चीजें ध्यान लगाकर और गहराई से उनके बारे में अध्ययन किया था।

–क्यों इतनी ध्यान और गहराई में पढ़े थे तुमने?

–क्योंकि दोस्तों के बीच बाजी लगा चुका था।

–इसी प्रकार तुम्हारा शतरंज खेलने का अभ्यास भी उन बच्चों से कम है या फिर तुम खेलते समय ध्यान इधर-उधर रखते होंगे। सुमित, तुम्हारे सामने अभी एक और लक्ष्य है जिला स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता जीतना। तुम्हारे पास दिमाग भी है और मन भी है। हाँ, दिमाग और मन दोनों को शतरंज के ऊपर केन्द्रित रखना।

सुमित को समझाने के बाद माँ सुमित के कमरे से बाहर चली गई। सुमित माँ की बातों को गहराई से सोचने के बाद बोल पड़ा– माँ मैं तुम्हें यह विश्वास दिलाता हूँ कि मैं ये जिला स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करूंगा।

मन ही मन यह सोचकर वह प्रतिदिन मन व बुद्धि को एकाग्र कर पूरी लगन से प्रतियोगिता की तैयारी करने में जुट गया। आखिर उसकी बुद्धि, लगन व आत्मविश्वास द्वारा उत्पन्न शक्ति एक ही जगह पर केन्द्रित हो गई। फिर भला सफलता कैसे दूर रह सकती थी। सुमित ने जिला स्तरीय प्रतियोगिता जीत ली।

पौराणिक कथा

चिरायु मार्कण्डेय

मृकण्ड नामक एक महर्षि थे। उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। उनकी पत्नी का नाम मरुद्गति था। दोनों पति-पत्नी भगवान के अनन्य भक्त थे। वैसे तो दोनों का जीवन सुखपूर्वक गुजर रहा था, लेकिन कभी-कभी उन्हें संतान की कमी खलने लगती। जब कभी संतान के अभाव का ध्यान आता, मरुद्गति उदास हो जाती।

पत्नी को उदास देखकर महर्षि मृकण्ड भी सोच में पड़ जाते। एक बार उन्होंने सोचा, "भगवान के लिए कुछ भी असम्भव नहीं। मुझे भगवान को प्रसन्न करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि भगवान प्रसन्न हो गए तो अवश्य मुझे सन्तान का सुख भी प्राप्त हो जायेगा।"

ऐसा सोचकर उन्होंने अपना शेष जीवन भक्ति में ही व्यतीत करने का निर्णय किया। वह दिन-रात प्रभु की उपासना में तल्लीन रहने लगे। एक दिन वह ध्यानमग्न बैठे थे कि उन्हें ऐसे लगा जैसे भगवान शिव उनके सामने प्रकट हुए हैं। उसी मग्न अवस्था में वह भगवान शिव से बातचीत करने लगे।

भगवान शिव ने कहा, ''मृकण्ड, बताओ तुम्हें कैसा पुत्र चाहिए? उत्तम गुणों वाला अल्पायु पुत्र या बड़ी आयु वाला गुणहीन पुत्र।''

मृकण्ड ने सोचा, ''गुणवान व्यक्ति मृत्यु के साथ नहीं मरता। जब तक उसके गुणों की छाप जनमानस के मन पर रहती है, तब तक वह भी जीवित रहता है। इसके विपरीत गुणहीन व्यक्ति जीवित मुर्दे के समान है। गुणहीन दीर्घ आयु पुत्र से तो गुणवान अल्पायु पुत्र ही ठीक है।'' यह सोचकर उन्होंने भगवान शिव से कहा, ''भगवन, मुझे ऐसा पुत्र नहीं चाहिए जिससे न तो मेरे कुल का नाम हो और न जगत का कल्याण। इसलिए गुणहीन दीर्घजीवी पुत्र के बजाय आप मुझे गुणवान पुत्र का ही वरदान दीजिए, भले ही वह अल्पायु क्यों न हो।''

वरदान देकर भगवान शिव आँखों से ओझल हो गए। तभी महर्षि मृकण्ड की समाधि टूट गई। उन्होंने कुछ क्षण पहले घटी घटना पर विचार किया और मन्द-मन्द मुस्कुरा दिए।

समय पाकर मरुद्गति की कोख से पुत्र ने जन्म लिया। उसका नाम मार्कण्डेय रखा गया। ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता गया, त्यों-त्यों उसके गुणों का विकास होता गया। उसने वेद-शास्त्रों का विधिवत् अध्ययन किया और भगवद्चिन्तन में व्यस्त रहने लगा। महर्षि मृकण्ड ने उसे दो उपदेश दिए, **''जो कोई भी सन्त-महात्मा आए उसकी लगन से सेवा करना, उसे प्रसन्न करके उसका आशीर्वाद प्राप्त करना तथा हर समय सर्वशक्तिमान परमात्मा का ध्यान करना।''**

मार्कण्डेय ने अपने पिता की दोनों आज्ञाओं का पालन किया। वह हर समय भगवद्चिन्तन (प्रभु-भक्ति) में ही व्यस्त रहता। यदि कोई महात्मा आश्रम आ जाता तो वह पूरे मनोयोग से उसकी सेवा करता। महात्मा प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद देते, जिसके फलस्वरूप उसके गुण और निखरने लगे।

एक बार सप्त ऋषि महर्षि मृकण्ड के आश्रम की ओर आए। उनके तेज-दीप्त चेहरों को देखकर मार्कण्डेय बहुत प्रभावित हुआ। उसने उनको श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया तथा उनकी सेवा में जुट गया। बालक मार्कण्डेय के सेवा-भाव और भक्ति-भाव ने उन सातों महान ऋषियों को प्रसन्न कर दिया। जब सप्तर्षि आश्रम से जाने लगे तो मार्कण्डेय ने बारी-बारी सबको प्रणाम किया। सभी ने उसे दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया। तभी ऋषि भारद्वाज की निगाह मार्कण्डेय के ललाट पर पड़ी। उन ऋषियों को ललाट की रेखाएं पढ़ने में महारत हासिल थी। ललाट की रेखाओं को देखकर वे चौंके। उन्होंने अपने साथी अन्य ऋषियों से कहा, ''हम सबने इस बालक को दीर्घायु होने का आशीर्वाद तो दे दिया है, लेकिन इसके ललाट की रेखाओं के अनुसार तो इसके जीवन के केवल तीन दिन ही शेष हैं।''

ऋषि भारद्वाज की बात सुनकर सबकी निगाहें बालक मार्कण्डेय के ललाट पर टिक गई। ऋषि वशिष्ठ ने कहा, ''विधि के अनुसार तो इसके जीवन के केवल तीन दिन शेष हैं, लेकिन ऐसे ओजस्वी और गुणवान बालक को इतनी छोटी आयु में मृत्यु को प्राप्त नहीं होना चाहिए। सबने इसे दीर्घायु होने का आशीर्वाद भी दिया है। यह आशीर्वाद अवश्य सत्य होना चाहिए।'' अन्य सभी ने वशिष्ठ जी की बातों का अनुमोदन किया।

बहुत सोच-विचार के बाद सातों ऋषि ब्रह्मलोक में पहुँचे। ब्रह्मा जी ने उनका खूब आदर किया और फिर कहा, ''आप बालक मार्कण्डेय की चिन्ता न करें। महात्माओं द्वारा सहज में दिया गया वरदान मिथ्या हो ही नहीं सकता। आप लोग चिन्ता न करें। सबकुछ भगवान पर छोड़ दें। वह अवश्यंभावी (होनी) को बदल देंगे।''

हुआ भी ऐसा ही। गणना के अनुसार जो मार्कण्डेय के जीवन का अन्तिम दिन था, उस दिन सभी भगवान के ध्यान में मग्न रहे। एक बार मार्कण्डेय को ऐसा लगा जैसे कोई उसके प्राणों को खींचना चाहता है, उसे अपनी सांस रूकती सी लगी। लेकिन तभी उसे ऐसा लगा जैसे साक्षात् भगवान शिव उसे सहला रहे हैं, प्यार कर रहे हैं और फिर वह दिन बिना किसी दुर्घटना के गुजर गया।

महात्माओं के आशीर्वाद से अल्पायु मार्कण्डेय चिरायु हो गया। इसीलिए नीतिवान कहते हैं कि **सदा महात्माओं का आदर करो, सदा उनकी सेवा करो, उनका आशीर्वाद प्राप्त करो; क्योंकि महात्माओं के आशीर्वाद से होनी भी टल जाती है, भाग्यहीन भी भाग्यवान बन जाता है।**

– ('सुना आपसे कहा आपसे' में से)

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

मैं मोटू, मौली और चिंटू को भी फ़ोन करके बुला लेती हूँ।
किट्टी! हम सब आ गए, चलें अब बाहर।
वाह! बारिश के इस खुशनुमा मौसम का मज़ा तो भीगने में ही है।
पर मुझे तो बारिश में भीगना बहुत अच्छा लगता है, मैं नहीं जाऊँगी।
हम ज्यादा देर बारिश में नहीं भीगेंगे वरना बीमार पड़ जाएंगे।

चलो हम सब मिलकर पानी में कागज की नाव बनाकर चलाएं।

अरे! किट्टी यह क्या कर रही हो, मैं पानी में गिर जाऊँगा।

चिंटू! पानी में गिर गया, बड़ा मजा आया।

किट्टी! यह तुमने क्या किया? मुझे पानी में क्यों गिरा दिया?
रूको! मैं तुम्हें अभी बताता हूँ।
यह क्या मैं तो गिर गई?
धड़ाम
ऐ... किट्टी पानी में गिर गई! मज़ा आया। अरे ये क्या? किट्टी तुम्हें तो छींक आने लगी।
छीक
मैंने तुम्हें मना किया था कि बारिश में मत भीगो। पर तुमने मेरी नहीं सुनी और अब पड़ गई बीमार।

संकलन : रीटा (दिल्ली)

कभी न भूलो

★ जो कार्य जितनी नेकनीयत से किया जायेगा, उतना ही श्रेष्ठ होगा। – महात्मा बुद्ध

★ जुबान की अपेक्षा जीवन से उपदेश देना कहीं अधिक प्रभावकारी है।

★ ईमानदारी और परिश्रम से प्राप्त धन– अर्थ है। और जो धन बेईमानी और शोषण से प्राप्त होता है वह अनर्थकारी होता है।

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

★ एक मिनट देर से पहुँचने की अपेक्षा एक घंटे पहले पहुँचना अच्छा है। – शेक्सपीयर

★ जो कुछ तुम आज कर सकते हो, उसे कल के भरोसे पर कभी मत छोड़ो। – फ्रैंकलिन

★ बुरी सोहबत से उसका न होना ही अच्छा है, क्योंकि हम दूसरों के गुणों की अपेक्षा दोषों को जल्दी ग्रहण कर लेते हैं। – स्वामी विवेकानन्द

★ गुस्से का सर्वोत्तम उपचार मौन है। – सेनेका

★ मधुमक्खी के समान गुलाब से मधु ले लो और कांटे छोड़ दो। – अमेरिकी कहावत

★ जो गुणी होते हैं, वे अपनी जिम्मेदारियों की बात सोचते हैं। जो गुणहीन होते हैं, वे अपने अधिकार का नाम रटा करते हैं।

★ सत्य का प्रभाव स्वत: प्रकट होकर रहता है। सत्य में असीमित बल व तेज होता है।

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

★ ज्ञानी मनुष्य की दृष्टि दूसरों की अच्छाइयों पर पड़ती है जबकि मूर्ख लोग दूसरों के अवगुण टटोलते हैं। – विनोबा भावे

★ जिसके मन में संतोष है, उसके लिए हर जगह संपन्नता है। – संस्कृत लोकोक्ति

★ सुख प्राप्ति का यह भेद नहीं है कि आपको जो अच्छा लगे आप वह कर सकें, बल्कि यह है कि जो आप करें, वह अच्छा हो।

– जे.एम. स्वेअर्टयंग

★ उस दिन को बेकार ही समझो, जिस दिन तुम हँसे नहीं। – चेम्सफोर्ड

★ हमें बातचीत करते समय कम से कम बोलना चाहिए। यह नहीं कि अपनी ही अपनी कहते रहें, दूसरों की ज्यादा सुननी चाहिए।

– लांगफेलो

★ मोह, माया, अहंकार, ईर्ष्या तथा क्रोध पर काबू पा लेने वाला सच्चा योगी है।

– महर्षि अरविन्द

★ अहंकार ऐसी आग है जो तमाम संचित पुण्यों को जलाकर नरक की ओर धकेल देती है। – संत कबीरदास

★ आत्मविश्वास असम्भव लगने वाले कार्यों को भी सम्भव बना देता है।

– आचार्य श्रीराम शर्मा

कविता : राहुल शर्मा

देखो, बरखा रानी आती

छम छम का गीत सुनाती,
देखो, बरखा रानी आती।

नदी-नाले और तालाबों में,
देखो, बरखा नाच दिखाती।
रिमझिम की तान सुनाती,
देखो, बरखा रानी आती।।

वर्षा से खुश होकर मोर,
वन में अपना नाच दिखाते।
वर्षा की बूंदों में नहाकर,
पक्षी मिलकर गीत सुनाते।।

पत्तों में छिपकर जब कोयल,
मीठे-मीठे गीत सुनाती।
तब वह सबके मन को भाती,
देखो, बरखा रानी आती।।

बच्चों के मन को हर्षाती,
देखो, बरखा रानी आती।

कविता : डॉ. रामनिवास 'मानव'

आई वर्षा

बाद बहुत दिन आई वर्षा,
देख सभी का मन था हर्षा।

बादल गरजा, बिजली कड़की,
अम्बर में ज्वाला-सी भड़की।

फिर तो इतना बरसा पानी,
याद सभी को आई नानी।

भीतर पानी, बाहर पानी,
यहाँ वहाँ घर घर में पानी।

छोटे-बड़े सभी घबराये,
अब क्या होगा, समझ न पाये।

रूकी अचानक फिर वर्षा,
देख इन्द्रधनुष, मन हर्षा।

लेख : डॉ. विनोद गुप्ता

चींटियों से भी सीख सकता है इंसान

चींटी दुनिया का सबसे छोटा जीव है लेकिन इसमें ऐसे अनेक गुण, विशेषताएं या विलक्षणताएं हैं, जिससे इंसान बहुत कुछ सीख सकता है। कई मायनों में चींटियां इंसान की गुरु हैं।

नन्हीं-सी चींटी आपके अनुमान से कहीं ज्यादा चालाक होती है। अपना बेहद कारगर परिवहन नेटवर्क बनाने के लिए चींटियां बहुत कम समय में बहुत सारी जगहों को जोड़ लेती हैं और ऐसा करने के लिए उन्हें किसी नेता की जरूरत नहीं होती।

चींटियां आकार में भले ही छोटी होती हों, लेकिन बल, बुद्धि और युद्धकौशल में वे बड़े से बड़े जीव को मात दे सकती हैं। ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने चींटियों की युद्धकला को लेकर उनका अध्ययन किया। उन्होंने देखा कि चींटियां अपने से कई गुना ताकतवर दुश्मन पर कैसे काबू पाती हैं। जहाँ हम अपने से ताकतवर दुश्मन को देख दुबक जाते हैं, वहीं चींटियां संगठित होकर उसका मुकाबला करती हैं और उसे परास्त कर देती हैं।

चींटियां इतनी लगनशील और परिश्रमी होती है कि पूछो मत। वे कभी हिम्मत नहीं हारतीं। ऊँचाई पर चढ़ते समय वे अनेक बार गिरती हैं लेकिन हर बार उठकर पुनः चढ़ने का प्रयास करती हैं और अंततः अपने लक्ष्य को पाकर ही दम लेती है।

चींटियां हर हाल में अपना लक्ष्य साधती हैं। ये लक्ष्य तक पहुँचने और वापस बिल तक आने में बड़े अनुशासन का प्रदर्शन करती हैं। जरूरत पड़ने पर वे रास्ते में मुँह से मुँह मिलाकर एक-दूसरे से संवाद भी स्थापित करती हैं।

चींटियों के रास्ते में जब कोई बाधा रखी जाती है तो वे पीछे मुड़ने की बजाय अपनी दिशा में नया और सबसे छोटा रास्ता खोजने में जुट जाती हैं।

एक चींटी एक पत्ती को काटकर उसे ढोती है और उसका वजन उसके शरीर के भार से पचास गुना ज्यादा होता है। चींटियां एक कतार बनाकर मेहनत से तोड़कर लाई गई पत्तियां ढोकर अपने घर लेकर जाती हैं। यहाँ ये चींटियां इन पत्तियों को जमीन पर बिछाती हैं ताकि इस पर फंगस या फफूंद उग जाए। ये फफूंद है जो उनके लिए भोजन पैदा करता है।

चींटियां बूढ़ी होने पर भी काम करती रहती हैं। जब पत्तियां खाने वाली चींटियों के दांत घिस जाते हैं तो पता है वे क्या करती हैं? बूढ़ी चींटियां पत्तियां काटने की बजाय उसे ढोने का काम करने लगती हैं।

बूढ़ी चींटियों के लिए पत्ती काटना और उन पर पकड़ बनाना मुश्किल हो जाता है। जिनके जबड़े घिस जाते हैं तो वे अपना काम पूरी तरह से बदल देती हैं। काटने का काम वे युवा चींटियों पर छोड़ देती हैं और खुद माल ढोने का काम ले लेती हैं। चींटियों के समाज में हर चींटी अपने मन-मुताबिक काम कर सकती हैं। इस तरह वे अपने बुढ़ापे में भी अपनी उपयोगिता बनाए रख सकती हैं।

अनुशासन कोई चींटियों से सीखें। इन्हें भोजन की गंध काफी दूर से पता चल जाती है। ये उस तक पहुँचने और उसे लेकर अपने बिलों तक वापस पहुँचने में बड़े अनुशासन का परिचय देती हैं। ये सदैव कतार में चलती हैं।

चींटियां सामाजिक होती हैं और वे छोटी-छोटी बस्तियां बनाकर रहती हैं। चींटियों के समाज में भी राजा और रानी होते हैं। इसके अलावा काम करने के लिए सेवक चींटियां भी होती हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि हर बस्ती की अपनी सेना होती है।

चींटियां अपना रास्ता नहीं भूलतीं। जिस रास्ते से वे जाती हैं, उसी से वापस लौटती हैं। दरअसल, वे जाते समय रास्ते पर फीरोमोन छोड़ती जाती हैं जो उसे वापस आने में मदद करता है। समूह की चींटियां भी इसका अनुसरण करती हैं तथा भोजन को अपने बिलों में ले आती हैं।

कहानी : कमल सोगानी

नगाड़ों की आवाज़

जूनागढ़ के एक बादशाह के पास सफेद हाथी था। बादशाह जब भी शिकार पर जाते, इसी पर बैठकर जाया करते। यह हाथी अपनी सूंड से रास्ते में मिलने वाले हिंसक पशुओं को घायल कर देता। हाँ, घायल तब ही करता, जब वह पशु उस पर आक्रमण करता। अन्यथा वह अपनी मस्त और मतवाली चाल में चलता रहता था।

एक बार ऐसे ही बादशाह जंगल में शिकार ढूंढ रहे थे, तभी घात लगाकर बैठे तीन शेरों ने मिलकर हाथी को आस–पास से घेर लिया। हाथी पर आसीन बादशाह शेरों के खतरनाक इरादे देखकर ऊपर से भाले चलाने लगा। लेकिन एक–एक करके उसके हाथों से दोनों भाले जमीन में गिर पड़े। बादशाह घबरा उठा। मौत सामने दिखाई दे रही थी। तभी बादशाह ने हाथी के कान में कहा– गजराज जी, कुछ उपाय करो, इन शेरों से संघर्ष करो...!

अपने स्वामी के मुख से ऐसी बात सुनते ही हाथी का मनोबल जाग गया। उसने अपनी सूंड और लातों से तीनों शेरों को बुरी तरह जख्मी कर दिया और फिर आगे बढ़ने लगा। लेकिन अब बादशाह ने शिकार करना उचित न समझा और अपने महल में लौट आया...!!

दूसरे दिन भरे दरबार में बादशाह ने अपने हाथी की बहादुरी का किस्सा सुनाया तो सभी दांतों तले अंगुली दबाने लगे। अब बादशाह ने इस हाथी को एक नाम दिया– योद्धा। इसकी देखभाल के लिए चार कर्मचारी अलग से तैनात किये। समय–समय पर हाथी को उसकी पसंद की खुराक दी जाने लगी।

बादशाह ने इसी हाथी पर सवार होकर दो युद्ध भी लड़े। दोनों में ही उसकी विजय हुई।

समय गुजरने के साथ हाथी भी बूढ़ा हो गया। इस कारण बादशाह ने इसे युद्ध में ले जाना बंद कर दिया, किन्तु उसका हाथी के प्रति प्रेम यथावत रहा।

एक दिन वह तालाब में पानी पी रहा था। तालाब में पानी कम था, इसलिए तालाब के मध्य में पहुँचा लेकिन अचानक दलदल में फंस गया। वृद्धावस्था के कारण हाथी अपने शरीर को दलदल से बाहर निकालने में अक्षम था। वह मदद के लिए जोर–जोर से चिंघाड़ने लगा। उसकी चिंघाड़ सुनकर लोग उसकी ओर दौड़ पड़े, किन्तु तालाब से उसे निकालने में वे भी लाचार थे। तब उन्होंने उसके शरीर में भाले चुभाने शुरू किये ताकि उसकी तीखी चुभन से वह अपनी समूची ताकत लगाकर बाहर निकल सके। लेकिन ये प्रयास भी असफल रहा, वह नहीं निकल पाया ...।

दलदल में हाथी के फंसने का समाचार बादशाह तक पहुँचा, तो वह तत्काल अपने सबसे बुजुर्ग और अनुभवी महावत को लेकर आया। महावत ने बादशाह को सलाह दी कि तत्काल युद्ध के नगाड़े जोर–जोर से बजवाइए और सैनिकों की कतार हाथी के सामने खड़ी कर दीजिए।

बादशाह ने ऐसा ही किया। नगाड़ों की आवाज़ और सैनिकों की कतार देख हाथी में ऊर्जा का संचार हुआ और वह तुरन्त दलदल से बाहर निकल आया।

अपने बुजुर्ग अनुभवी महावत की तरतीब कामयाब देखकर बादशाह ने महावत को पुरस्कार दिया और उससे पूछा– 'लेकिन यह संभव कैसे हुआ?'

महावत बोला– 'सरकार! मनोबल जाग्रत होते ही सफलता मिलने में देर नहीं लगती।'

पढ़ो और हँसो

एक अनपढ़ ग्रामीण धोती पहनकर शहर घूमने आया। वहाँ वह शहर की बड़ी-बड़ी इमारतों को देखते हुए सामने से साड़ी पहने एक महिला से टकरा गया।

महिला ने कहा– आई. एम. सॉरी।

ग्रामीण ने समझा कि महिला अपनी साड़ी के बारे में बतला रही है, इसलिए उसने भी अपने कपड़ों के बारे में कहा– आई. एम. बढ़िया धोती।

★----------★

सुप्रभ : (अपनी बहन अदिति से) आजकल मेरी जिन्दगी में सब कुछ उल्टा चल रहा है।

अदिति : लेकिन भईया, मुझे तो आप सीधे चलते हुए ही दिखाई पड़ते हैं।

★----------★

भिखारी : साहब, परिवार से बिछुड़ गया हूँ, मिलने के लिए 50 रुपये चाहिए।

साहब : कहाँ है तेरा परिवार।

भिखारी : सिनेमा हॉल में फिल्म देख रहा है।

– राहुल (बराड़ा, अम्बाला)

★----------★

सोनू : सुना तुमने? एक आदमी भैंस का दूध पीते-पीते मर गया।

पप्पू : क्यों?

सोनू : क्योंकि उसी समय उस पर भैंस बैठ गई।

★----------★

माँ : सोनू बेटा क्यों रो रहे हो?

(सोनू और जोर-जोर से रोने लगा तभी सोनू के पापा आ गये।)

सोनू के पापा : अरे, सोनू की माँ सोनू क्यों रो रहा है?

माँ : मेरे पूछने पर और जोर-जोर से रो रहा है, आप ही पूछ लो।

पापा : बेटा, सोनू क्यों रो रहे हो?

सोनू : आप दोनों की शादी की फोटो में मेरा फोटो क्यों नहीं है?

★----------★

आर्यन : भाई ये मेरे जामुन के पेड़ के नीचे तुम गुलाब का पौधा क्यों लगा रहे हो?

उज्ज्वल: ताकि ये दोनों मिल के हमें गुलाब-जामुन दे सकें।

– पुलकित (हरदेव नगर, दिल्ली)

★----------★

(मीना अपनी छोटी बहन पुनीता के घर अपने सात बच्चों के साथ शहर घूमने गयी थी। एक महीने के बाद जब वह वापस जाने को तैयार हुई तो पुनीता के पति ने उन्हें स्टेशन छोड़ने के लिए जल्दी से कार बाहर निकाली।)

मीना : आप इतना कष्ट क्यों कर रहे हो? हम बस से चले जाएंगे।

पुनीता के पति : हमें कष्ट नहीं बल्कि खुशी हो रही है। कष्ट तो हमें तब होगा जब ट्रेन छूटने से आप वापस चली आयेंगी।

★----------★

अमन : (राहुल से) वह कौन-सा गेट है, जिसमें हम प्रवेश नहीं कर सकते।

राहुल : कोलगेट।

★----------★

डॉक्टर : (राजन से) चिन्ता की कोई बात नहीं है। तुम दिल खोलकर हँसा करो।

राजन : डॉक्टर साहब! लोगों को मुंह खोलकर हँसते हुए तो देखा है किसी को दिल खोलकर हँसते नहीं देखा।

– आर्यन (हरदेव नगर, दिल्ली)

★----------★

ग्राहक : यह मच्छरदानी कितने की है?

दुकानदार : पाँच सौ रुपये की। इसमें कोई मच्छर नहीं घुस सकता।

ग्राहक : मुझे नहीं लेनी। जब इसमें मच्छर नहीं घुस सकता तो मैं कैसे घुस सकता हूँ?

★----------★

राजेश : (सुशील से) यार! आज तो सारा पेपर ही खाली दे आया हूँ। एक भी प्रश्न मैंने हल नहीं किया।

सुशील : मूर्ख ये क्या किया तूने। अब निरीक्षक यही सोचेंगे कि तुमने मेरी नकल की है।

★----------★

महेश : सबसे पहली सुरंग किसने बनाई?

सुरेश : चूहों ने।

★----------★

अध्यापक : (शेरू से) तुमने कितने दिनों तक लगातार बारिश होते देखी है।

शेरू : एक दिन तक।

अध्यापक : क्या दो दिन तक बारिश नहीं हो सकती?

शेरू : नहीं सर! क्योंकि बीच में रात भी तो होती है।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

★----------★

प्रेरक-प्रसंग : जगदीश कौशिक

नमक की लाज

एक बार एक चोर रात को चोरी करने घर से निकला, चलते-चलते वह नजदीक के एक नगर में पहुँच गया। रात के लगभग ग्यारह बजे का समय था। वह एक मन्दिर के पास से गुजर रहा था। मन्दिर में अभी कथा हो रही थी। चोर ने सोचा, अभी लोग जाग रहे हैं। चोरी करने का समय नहीं। थोड़ी देर यहाँ बैठकर कथा ही क्यों न सुन लूं। इस बहाने भगवान का नाम भी कानों में पड़ जायेगा। उसकी कृपा से शायद अच्छा माल हाथ लग जाये। ऐसा सोचकर वह श्रोताओं में बैठ गया।

कथा में कोई प्रसंग नमक के बारे में चल रहा था। पंडित जी बता रहे थे कि मनुष्य जिसके घर का नमक एक बार भी खा ले तो उसे हराम नहीं करना चाहिये अर्थात् उस घर का कभी बुरा करना तो क्या, बुरा सोचना भी नहीं चाहिये। जहाँ तक हो सके उस घर की भलाई ही करनी चाहिये, नमक खाकर उसे हराम करने वाला मनुष्य पापी होता है, उसे कहीं चैन नहीं मिल सकता। कथा समाप्त हो गई। सब लोग अपने-अपने घरों को चल दिये। चोर

भी किसी धनी के घर की तलाश में चल पड़ा।

एक घर को अपने लिये सुरक्षित समझकर उसके भीतर चला गया, परिवार के लोग चैन की नींद सो रहे थे। उसने सारा कीमती सामान इकट्ठा करके कपड़े में बांध लिया। कीमती सामान मिलने के कारण वह बहुत प्रसन्न था। अचानक उसे भूख महसूस हुई और वह रसोई में चला गया। लोग जाग न जायें इसलिये उसने बिजली न जगाई। अंधेरे में ही एक डिब्बा खोला, उसमें रोटी पड़ी थी, उसने रोटी का टुकड़ा तोड़कर मुँह में डाल लिया। यह क्या? रोटी नमकीन थी। टुकड़े के साथ नमक का कुछ अंश भी उसके पेट में चला गया।

उसे कथा में नमक वाली सुनी बात भूली नहीं थी। उसे ध्यान आया कि इस घर का नमक खा लिया गया है चाहे अनजाने में ही खाया गया है, परन्तु खाया तो गया ही है; उसका विवेक जाग पड़ा। मन ने संकेत दिया– इस माल को ले जाने से तू 'नमक हराम' बन जायेगा, तुझे नरक में भी स्थान नहीं मिल पायेगा, तुझे यह पाप-कर्म नहीं करना चाहिये। ऐसा सोचकर उसने सारा सामान वहीं छोड़ दिया। एक कागज पर यह शब्द लिखकर कागज वहीं छोड़कर चला गया–

श्रीमान जी! मैंने तुम्हारे घर चोरी की, परन्तु अचानक आपका नमक भी मेरे शरीर के अन्दर चला गया, इसलिए मैं नमक हराम न बनकर नमक हलाल बनकर खाये नमक का हक अदा कर रहा हूँ। अर्थात् आपका माल यहीं छोड़कर जा रहा हूँ। नमक हराम पाप होता है। आशा है आप मेरी भावना को समझते हुए मुझे क्षमा करेंगे। धन्यवाद।

मई अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

सृष्टि सोनी 9 वर्ष
गुरुकृपा ज्वेलर्स, बागीपुल,
जिला : कुल्लू (हि.प्र.)

शिवम 9 वर्ष
सल्लागढ़,
पलवल (हरियाणा)

जयंत गोविन्दानी 10 वर्ष
सिंधी कालोनी, नवापारा (राजिम)
जिला : रायपुर (छत्तीसगढ़)

वेदांत मौर्या 10 वर्ष
23, साई बंधु सोसायटी, नवघर रोड,
भायंदर (ई), जिला : ठाणे (महा.)

रश्मि कुशवाहा 13 वर्ष
गाँव : कछपुरा, पोस्ट : बिसाना,
जिला : हाथरस (उ.प्र.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सिमरन (आदर्शनगर, फगवाड़ा),
लतिका (तलावड़ी सर्कलु, अहमदाबाद),
हरमीत (आनंदनगर, पटियाला),
श्रेया (बुढ़ार, शहडोल),
अंशिका (सरपंच का बारा, दिल्ली),
सिमरन (गंगोला मोहल्ला, अल्मोड़ा),
कोमल (रामपुर बुशहर),
आयुष, हर्षित (अगस्त्यमुनि, रुद्रप्रयाग),
खुशदीप (अशोक विहार, नकोदर),
आदित्य (न्यू प्रेमनगर, श्रीगंगानगर),
राहुल (फरीदाबाद), रोनित (उल्हास नगर),
अर्पित (वसंत कुंज, दिल्ली),
नव्या (शास्त्रीनगर, बरेली),
लक्ष्य (नैनी, इलाहाबाद),
कृष (योगराज कॉलोनी, दिल्ली),
स्नेहा, अवनी (ठाकुरपुरा, अम्बाला)
अश्विनी कुमार (गोरेगांव, मुंबई),
सुमति वर्मा (नौबस्ता, कानपुर),
ओम, भाविका, दक्ष, प्रियंका, भूमि (गोधरा)।
अदिति (जयेन्द नगर, महोबा)।

जुलाई अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 जुलाई तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) सितम्बर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

विशेष आलेख : दमनेश कुमार (केशवपुरम, दिल्ली)

'सेल्फी' से 'स्वयं' को बचायें

मानव जीवन ईश्वर की एक अनमोल देन है। सभी जीवों में मानव जीवन को ही श्रेष्ठ माना गया है। यद्यपि अन्य प्राणियों में भी मानव की तरह ही अनेकों समानताएं होती हैं (जैसे भोजन, निद्रा आदि) परन्तु फिर भी मानव में एक विशेष गुण है कि वह विवेक यानि बुद्धि से अपने लिए अच्छे-बुरे के विषय में सोच सकता है।

प्रकृति ने मनुष्य को जन्म-मृत्यु, लाभ-हानि व यश-अपयश को छोड़कर सभी प्रकार के कार्य करने की स्वतंत्रता दी है, परन्तु एक अच्छा जीवन कैसे जीया जा सकता है। ये तो आदमी को स्वयं अपने विवेक से सोचना है। अच्छे कर्म करने के लिए रचनात्मक विचारधारा वाले लोगों का संग करेगा, अच्छी शिक्षाप्रद पुस्तकों का अध्ययन करेगा, महापुरुषों व बुजुर्गों की शिक्षाओं को जीवन में अपना कर सकारात्मक जीवन जिएगा तभी उसकी गिनती विचारशील व योग्य व्यक्तियों में की जा सकेगी।

नि:संदेह, आज विज्ञान व प्रौद्योगिक ने बड़ी तेजी से नये-नये आविष्कार कर मानव जीवन को बहुत सहज व सरल बना दिया है। ये सभी साधन और सुख-सुविधाएं हमारे लिए बनाए गए हैं परन्तु आज का मनुष्य विशेषकर युवा वर्ग इन उपकरणों की सुविधा का सदुपयोग करने की बजाए उनका दुरुपयोग कर उनके दुष्प्रभाव से अपने जीवन को संकट में डालकर अपनी जीवनलीला ही समाप्त करने पर तुला हुआ है।

वर्तमान में (सचल वार्ता के लिए) मोबाइल फोन हर आदमी के हाथ में आ गया है। इसमें एक नया प्रावधान डाला गया है, जिसके माध्यम से 'सेल्फी' लेना सहज हो जाता है। यानि कि किसी भी स्थिति में स्वयं का चित्र खींचकर उसे सुरक्षित कर लेना। युवाओं को यह एक नई सुविधा प्राप्त हुई है। यानि कि कुछ विशेष परिस्थितियों को अपने कैमरे में बंद करके व्हाट्सएप के माध्यम से एसएमएस या एमएमएस करके अपने चाहने वालों तक तुरंत भेजने का सुलभ साधन बन गया है। आज की युवा पीढ़ी इस सुविधा का इतना दुरुपयोग करने लगी है कि ईश्वर की इस अनमोल देन मानव जीवन को ही समाप्त करती जा रही है।

कुछ दिन पहले समाचार-पत्रों में एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी, जिसमें छपा था कि 'सेल्फी' लेते समय विश्व में अनुमानत: 127 मौतों की सूचना थी और उसमें केवल भारत में ही 76 मौतें हुई थीं। शेष मौतें अन्य देशों में हुई थी। इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि न जाने क्यों? ये सेल्फी का भूत सबसे ज्यादा भारत के युवाओं को ही चढ़ा हुआ है।

बेशक ये शौक युवा पूरा करें परन्तु केवल सुरक्षित स्थानों पर ही करें। पानी में घुसकर नहीं, ऊँची-नीची इमारतों पर चढ़कर नहीं, रेलवे की पटरियों या सड़क के बीच में नहीं। कहने का भाव कि किसी भी ऐसी जगह पर न करें जहाँ जान के जाने का खतरा हो। 'सेल्फी' के चक्कर में स्वयं को मौत का बुलावा न दें। यह बात सदैव ध्यान में रखनी होगी कि कोई 'सेल्फी' जिन्दगी से ज्यादा कीमती नहीं है।

☆ ☆ ☆

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्‌गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)